SHRI DHARAM CHANDER PRASHANT: Sir, I introduce the Bill.

THE NATIONAL HONOUR AND INTEGRITY (PROTECTION) BILL, 1987—contd.

डा. रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) माननीय उपसभाध्यक्ष जी, हमारे सदन के माननीय सदस्य श्री शिवकुमार मिश्र जी ने राष्ट्रीय गौरव और अखंडता के संरक्षण का उपबन्ध करने वाला जो विधेयक प्रस्तुत किया है, वह हर प्रकार से सराहनीय, प्रशंसनीय और अनिवार्य रूप से स्मरणीय है । इसके उद्देश्यों और कारणों का कथन करते हुए, माननीय सदस्य ने कहा है कि हाल ही में अनेक लोगों ने, अनेक अवसरों पर राष्ट्रगान और राष्ट्र ध्वज का अपमान कर के हमारे राष्ट्रीय गौरव का जो हमारे देश की एक बहुमूल्य निधि है, बहुत अनादर किया है । हाल ही में केरल राज्य में कुछ स्कूली बालकों ने राष्ट्रगान गाने से इंकार कर दिया तथा इस संबंध में राज्य प्राधिकारियों द्वारा की गयी कार्यवाही को भारत के उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी गयी और इस मामले में निर्णय बहुत दुर्भाग्यपूर्ण रहा । देश के प्रत्येक नागरिक के शरीर और आत्मा में देश भक्ति की भावना सदैव उपस्थित रहनी चाहिए, परन्तु यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि कुछ पृथकतावादी तथा उग्रवादी तत्व संविधान की प्रतियां और राष्ट्र ध्वज को जलाने की सीमा तक चले गए हैं । कुछ अन्य लोगों ने राष्ट्रीय समारोहों का बहिष्कार करने का आवहान किया है । उपसभापति महोदय, राष्ट्रीय गौरव की किसी भी कीमत पर रक्षा करनी चाहिए । इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि अपने महान देश और उसकी शानदार विरासत को बचाने के लिए उन लोगों को कड़ा दंड दिया जाये जो राष्ट्र ध्वज तथा राष्ट्रगान का अनादर करते हैं । इसलिए यह विधेयक माननीय सदस्य ने प्रस्तुत किया है ।

मान्यवर, उपसभाध्यक्ष जी, कभी प्रारम्भिक कक्षा में मैंने पढा था कि, "जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान हो, वह नर नहीं पशु ही निरा है और मृतक समान है ।" जिसको अपने राष्ट्र पर, अपनी जाति पर—जाति संकीर्ण शब्दों में नहीं बल्कि राष्ट्रीयता ही जाति है , उस संदर्भ में कवि ने कहा है, "जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान हो, वह नर नहीं पशु ही निरा है और मृतक समान है"। आज 40 वर्षों के बाद स्वतंत्रता के राष्ट्रीय गौरव और अखंडता के संरक्षण का प्रश्न इस महान सदन में उठाया जा रहा है, यह अपने आप में चिंता का विषय है । अनेक स्थानों पर देखा जाता है कि अराष्ट्रीय तथा पृथकतावादी तत्व संकीर्ण दृष्टिकोण से जीवन जीने वाले तत्व इस देश की एकता और अखंडता को और हमारे राष्ट्रीय गौरव की निधि को नष्ट-विनिष्ट करना चाहते हैं । ऐसी ताकतों के साथ हमें कड़ाई के साथ पेश आना है । वह इतिहास का स्वर्णिम दिन था जब 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ था । यूनियन जैक सैकड़ों वर्षों से हमारे देश में लहरा रहा था, वह उखाड़ कर फेंक दिया गया और अशोक चक्र से सुशोभित तिरंगा झंडा जिसके हरे, श्वेत, और केसरिया रंग हमारी भावना का प्रतीक है, हमारा राष्ट्रीय ध्वज बना । इस राष्ट्रीय ध्वज को लाल किले से लेकर छोटे-छोटे मकानों और झोंपड़ियों तक लहराया गया और यह हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक चिन्ह बना । अगर इस राष्ट्र के प्रतीक चिन्ह-ध्वज को अपमानित किया जाय, फाड़कर फैंका जाये , जलाया जाये या किसी तरह से उसके अंश को नुकसान पहुंचाया जाता है, तो यह भारत का नुकसान है । यह राष्ट्र का नुकसान है ? हमारी भावनाओं का कलंकित करने वाला यह दुष्कर्म है और ऐसे दुष्कर्म पर नियंत्रण लगना अनिवार्य है । हमारे शहीद "मेरी माता के सिर पर ताज रहे, ऐ हिंद मेरा आजाद रहे" कहते हुए शहीद हो गए । "सिर बांध कफन आज शहीदों की टोली निकली" कहते हुए इस देश की आजादी के शहीदों

ने अपनी छातियों पर गोलियां खाई। पीठ नहीं दिखायी। इस देश में ऐसे-2 अवसर आये हैं जब छात्र पढ़ते समय तिरंगा झंडा लेकर चलते थे जबकि पूरी ब्रिटिस हुकूमत सनिद्ध थी कि गोली मारी जाएगी। एक छात्र गोली खा लेता था तो दूसरे को तिरंगा दे देता था, लेकिन उसको झुकने नहीं देता था। इसी भावना से देश स्वतंत्र हुआ। सैकड़ों लाशें छात्रों की पिस गई, लेकिन तिरंगे झंडे को आंच तक नहीं आने दी जाती थी। तिरंगे झंडे की हमारी गाथा यह है :—

विजयी विश्वतिरंगा प्यारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला।
मातृ-भूमि का तन मन सारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा।
शान न इसकी जाने पाए,
चाहे जान भले ही जाए,
विश्व विजय करके दिखलाए,
तब होवे मन पूर्ण हमारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा।

ऐसे झंडे को आज कुछ सिरफिरे लोग, कुछ संविधान और भारत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता की महिमा में विश्वास न करने वाले लोग यदि बदनाम करते हैं, तो उनके लिए राष्ट्रीय गौरव और अखंडता संरक्षण विधेयक श्री शिव कुमार जी लाए हैं, उसमें विस्तार से सारी चीजें आ गई हैं। उन्होंने बड़ी राष्ट्रीय भावना और इस नैतिक धरातल पर इसको उठाया है। राष्ट्रीय ध्वज हो या राष्ट्रगान हो या संविधान हो यह किसी व्यक्ति, किसी इंडिविजुअल की संपत्ति नहीं है बल्कि सारे राष्ट्र की कोटि-कोटि जनता का प्रतीक है। जिस तरह से राष्ट्रीय ध्वज का अपमान हुआ है, जगह-जगह पर उसको सारे देश ने बड़ी गंभीरता और चिन्ता के साथ लिया है। हमारा राष्ट्रगान हमारी महिमा का द्योतक है। हमारी समस्त भावनाओं का केन्द्रीयकरण राष्ट्रगान में होता है और वे केन्द्रित होकर एक वाणी बनकर उद्घाटित होती है और उस वाणी को न गाना या उस वाणी के प्रति असम्मान प्रकट करना, मैं बहुत बड़ा द्रोह मानता हूं। द्रोह कई तरह के होते हैं। राजद्रोह होता है। जो लोग संविधान और राष्ट्रगान और राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करते हैं वे राष्ट्रद्रोही है। उन पर किसी तरह की कोई छूट देने की इजाजत किसी के हाथ में नहीं है। भारत के संविधान निर्माताओं ने इसे बनाया था। वह एक दस्तावेज है। जिससे राष्ट्र बंधा हुआ है। उसकी प्रतियां जलाना या उसे किसी तरह से विच्छृखल करना, उसको किसी तरह उसे अपमानित करना, यह अनुचित ही नहीं है, बल्कि नीचाति-नीच कर्म है। राष्ट्रीय गौरव का हमें तब बोध होगा जब हिमालय के उत्तुंग शिखर से लेकर कन्याकुमारी के तट तक, चाहे वहां तमिल का रहने वाला हो, चाहे केरल का रहने वाला हो, चाहे उत्तर प्रदेश का रहने वाला हो, चाहे नार्थ ईस्टर्न रीजन का रहने वाला हो, पहाड़ियों का रहने वाला हो, सारे लोग जब हमारे देश में मिलते हैं, तब देश बनता है। यह किसी जाति या धर्म या भाषा का नहीं है। यह किसी संप्रदाय या राजनीति में विश्वास करने वालों का नहीं है, बल्कि एकता में अनेकता है। इस देश में अनादि काल से जब से सृष्टि हुई है, तब से यह देश अपनी एकता के लिए सारे ब्रह्मांड में प्रयत्न करता रहा है और जगह-जगह कुछ ऐसे लोग जो राष्ट्रीयता में विश्वास नहीं करते, कुछ ऐसे लोग जो अपनी राष्ट्रीय एकात्मकता में विश्वास नहीं करते, कुछ ऐसे लोग जो राष्ट्र के संविधान के विपरीत जाकर अपने को संविधान के ऊपर साबित करते हैं, या किसी तरह का अपमान करते हैं, तो वह बर्दाश्त के बाहर है और उन्हें कड़े से कड़ा दंड देने का प्रावधान होना चाहिए। उसमें किसी तरह की छूट देना संविधान के प्रति और हमारे जो मूलभूत अधिकार और कर्तव्य हैं उनके प्रति उचित कार्य नहीं

[डा० रत्नाकर पाण्डेय]

होगा । जिस देश का अपना राष्ट्रीय चिह्न है, राष्ट्रीय ध्वज है, राष्ट्रीय अखण्डता और एकता का विचार है उस राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा भी होनी ही चाहिए । मुझे खुशी है कि 40 वर्षों के बाद हमने इस सदन में जो संविधान अंग्रेजी में था उसकी प्रतियों को हिन्दी और भारतीय भाषाओं में समस्त राज्यों को उपलब्ध कराने का प्रावधान कानून बना कर स्वीकार किया है । अभी पिछले सत्र में ही ऐसा किया है यह एक अच्छा लक्षण है । 40 वर्षों के बाद ही सही हमने एक ऐतिहासिक काम किया । भारत की समस्त भाषाएं प्रत्येक स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों की आत्माभिव्यक्ति का माध्यम हैं और चाहे कोई तमिल बोलता हो, चाहे कश्मीरी बोलता हो, चाहे तेलुगु बोलता हो, चाहे हिंदी बोलता हो, चाहे उर्दू बोलता हो, चाहे मलयालम बोलता हो लेकिन भारत के संविधान में जो राष्ट्र भाषा का दर्जा दिया गया है, समस्त भारतीय भाषाओं की जो लिंक लैंग्वेज है, जो सम्पर्क भाषा है, जो राजभाषा है वह हिंदी है । यह इस लिए नहीं है कि यह बहुमत की भाषा है । अगर आप केरल के मंदिरों में जाइये तो वहाँ भी हिन्दी का वातावरण हमें मिलेगा । तमिलनाडु के मंदिरों में जाइये तो वहां भी हमें मंदिरों के पुरोहित हिंदी में मंत्राभिषेक करते हुए, बात करते हुए मिलेंगे । इसकी लिपि देव नागरी लिपि सहज, सरल और शीघ्र सीखी जाने वाली है । सुनीति कुमारी चटर्जी जैसे विद्वानों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि यह सहज, सरल और सबसे शीघ्र सीखी जाने वाली लिपि है । यह देवनागरी लिपि जो हमारी संस्कृत भाषा है, आदि भाषा है उसकी लिपि है और संस्कृत समस्त भारतीय भाषाओं को मान्य है । अगर हमें राष्ट्रीय गौरव और अखंडता की, राष्ट्रीय ध्वज की, संविधान की रक्षा करनी है, राष्ट्रीय मान की रक्षा करनी है, उनका सम्मान करना है तो राजभाषा का भी सम्मान हमें करना होगा । मुझे खुशी है कि अगर हम भारत के पिछले 2000 वर्षों के इतिहास पर नजर डालें तो आज तक किसी भी शासक ने इन वर्षों में हिंदी को राजभाषा का दर्जा नहीं दिया । इन्दिरा गांधी पहली शासक थीं जिन्होंने इस आवश्यकता को महसूस किया कि राष्ट्रीय गौरव और अखंडता की रक्षा के लिए आत्माभिव्यक्ति का माध्यम सारे देश का एक होना चाहिए और राजकाज चलाने के लिए एक भाषा होनी चाहिए और राजभाषा का दर्जा हिंदी को उन्होंने दिया । संसदीय राजभाषा समिति की स्थापना 1976 में की गयी थी ।

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): It is only 100 years old, not 2000 years old. Maybe, just 70, 80 years old.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : हमारे मित्र गोपालसामी जी जब भी हिन्दी का प्रश्न आता है तो उठ खड़े होते हैं । हम तो उन सदस्यों में से हैं जो यह चाहते हैं तमिल को राजभाषा बना दिया जाए । हम इसको भी स्वीकार करते हैं । लेकिन अंग्रेजी को नहीं । (व्यवधान) मैं कह रहा था कि राजभाषा का दर्जा देने वाली इंदिरा गांधी पहली शासक थीं पूरे 2000 वर्षों के इतिहास में । उन्होंने इसलिए नहीं किया कि हिंदी बहुमत की भाषा है बल्कि इस लिए दिया कि अपने राष्ट्र की कोई न कोई एक भाषा होनी चाहिए । जो भारत की पूरी आत्माभिव्यक्ति की भाषा बने । और जब-जब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषा के प्रश्न पर हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही, शुरू में भारत के स्वतंत्र होने के साथ ही, उस समय कुछ दुराग्रही लोगों ने अनेक प्रकार के आंदोलन करके, यहां तक कि आग लगा करके आत्मदाह भी कर दिया । इस तरह के दुराग्रही लोगों ने जब-जब भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रश्न आया, कुछ थोड़े मुट्ठी भर लोगों ने, उसमें दखल देने की कोशिश की । सन् 1963 में और सन् 1965 में एक विधेयक आया । इसी सदन में यह तय

हुआ कि दस वर्षों के लिए जब तक कोई भी एक प्रांत इसे मान नहीं लेता है तब तक अंग्रेजी भाषा हिंदी के साथ-साथ सह-भाषा के रूप में चलेगी ।

सन् 1976 में वह दिन भी आया जब संसदीय राजभाषा समिति के माध्यम से बाईलिंग्वेल रूप में हमने काम करना शुरू किया । जो संसदीय राजभाषा समिति बनी हुई है उसमें 20 सदस्य लोक सभा के हैं और 10 सदस्य राज्य सभा के हैं। मुझे यह कहने में गर्व और गौरव का अनुभव हो रहा है कि जब सन् 1976 से 1986 तक हम एक भी खण्ड की रिपोर्ट राष्ट्रपति को नहीं दे सके, लेकिन सन् 1987 में संसदीय राजभाषा समिति ने राष्ट्रपति के समक्ष अपने दो खण्डों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है। पहला खण्ड अनुवाद खण्ड है और दूसरा खण्ड यांत्रिकी सुविधाओं का है और बाकी चार खण्ड भी एक वर्ष में संसदीय राजभाषा समिति गृहमंत्री श्री बूटा सिंह के माध्यम से राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत कर देगी, ऐसा निश्चय हम लोगों ने किया है । यह सचमुच में दुख: की बात है कि विदेशी भाषा में हमारे देश में काम हो । अंग्रेजी ने डिवाइड एण्ड रूल की पालिसी से, फूट डालो और शासन करो के नाम पर इस देश को हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों और अन्य न जाने कितनों वर्गों में बांटने का प्रयास किया है। हम सर्वधर्म समभाव में विश्वास करते हैं। कोई भी व्यक्ति अपने धर्म में विश्वास रख सकता है हिन्दू हिंदुत्व में विश्वास कर सकता है, मुसलमान अपने मजहब में विश्वास कर सकते हैं, क्रिश्चियन अपने मजहब में विश्वास कर सकते हैं। शायद विश्व में हिन्दुस्तान अकेला राष्ट्र है जहां धर्म की स्वतंत्रता है, अपने सम्प्रदाय में विश्वास करने की स्वतंत्रता है। राष्ट्रीयता के प्रश्न के साथ धर्म को आरूढ़ होने देने का कोई भी मक्सद न कभी रहा है और न कभी रहेगा। जहां तक भाषा का प्रश्न है, हमारी ब्यूरोक्रेसी इतनी चतुर है कि उसके कारण कठिनाइयां पैदा हो रही हैं। हमारे देश में कम्प्यूटराइजेशन बहुत तेजी से हो रहा है। श्री राजीव गांधी के नेतृत्व में हमने प्रतिज्ञा की है कि आने वाले बाहर वर्षों में हिन्दुस्तान दुनिया के सबसे अधिक बजबूत और शक्तिशाली राष्ट्रों में से एक होगा। टेक्नोलोजी की दृष्टि से, अध्यात्म की दृष्टि से, उद्योगों की दृष्टि से, उत्पादन की दृष्टि से और अन्य समस्त दृष्टियों से हमारा राष्ट्र दुनिया का एक महान राष्ट्र और मजबूत राष्ट्र बन जाएगा। उसमें हम कम्प्यूटर की आवश्यकता से इंकार नहीं कर सकते हैं, दूर संचार के साधनों से इंकार नही कर सकते हैं, दूरदर्शन की आवश्यकता से इंकार नहीं कर सकते हैं। हमारे देश में जब कम्प्यूटराइजेशन हुआ तो उसमें रोमन लिपि को चालू कर दिया गया है। राजभाषा विधेयक के प्रावधान की तरफ कतई ध्यान नहीं दिया गया है। रोमन लिपि में ही कम्प्यूटर के सभी साफ्ट वेयर बनाये गये हैं। जिस प्रकार से 40 वर्षों में आज भी हिन्दी का प्रयोग नहीं हो रहा है, उसी तरह से आने वाले दिनों में कम्प्यूटर से भी हिन्दी में काम करने में साफ्ट वेयर के अभाव में कठिनाई पैदा होगी। आने वाले दिनों में स्टेनोग्राफर का काम भी कम्प्यूटर करेगा। इस दृष्टि से एक साजिश चल रही है कि अंग्रेजी इस देश में लादी जाती रहे। ये कौन लोग हैं ? ये सिर्फ दो प्रतिशत से भी कम लोग हैं। ये लोग इस देश में 98 प्रतिशत जनता पर अंग्रेजी लादने की साजिश कर रहे हैं। ये लोग येन-केन-प्रकारेण किसी भी तरह से अंग्रेजी को बनाये रखना चाहते हैं ताकि इस देश की जनता को आत्माभिव्यक्ति अपनी भाषा में करने का मौका न मिले। हमारी योजनाएं कार्यान्वित क्यों नही होती है? इसका कारण यह है कि वे रीजनल भाषाओं में, क्षेत्रीय भाषाओं में, न बनकर अंग्रेजी में बनती हैं। या हिन्दी में हो न कि विदेशी, गुलामी की भाषा अंग्रेजी में हो। इसी लिये हमारी योजनाओं के कार्यान्वयन में विलम्ब होता है। हमे इस बात का दुख भी होता है कि जो अहिन्दी भाषा भाषी लोग हैं वे वोट मांगते समय जनता के बीच में जाकर हिन्दी और खड़ी बोली में वोट मांगते हैं लेकिन

[डा० रत्नाकर पाण्डेय]

जब वे इस सदन में या असेम्बली में आ जाते हैं तो वे अपने को महत्वपूर्ण दिखाने के लिये क्योंकि वे हीन भावना से ग्रसित हैं, इसलिये टूटी फूटी अंग्रेजी बोलते हैं। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, इस देश में एक बहुत अच्छी चीज हुई है। यह पीढ़ी और आने वाली पीढ़ियां जो हैं वह इतनी अशुद्ध अंग्रेजी बोलने लगे हैं, इतनी अशुद्ध अंग्रेजी लिखने लगे हैं, उसका इतना अशुद्ध उच्चारण करते हैं इससे अंग्रेजी आने वाले दिनों में स्वयं समाप्त हो जायेगी और भारतीय भाषायें और हिन्दी जो कि राज भाषा है वह सारे देश में प्रचलित होगी। देश का अपना राष्ट्रीय चिन्ह है, अपना राष्ट्रीय ध्वज है, अपना राष्ट्रीय संविधान है लेकिन उसकी अपनी राष्ट्र भाषा नहीं है। इससे अधिक चिंता और लज्जा की बात और दूसरी हो नहीं सकती। जहां संविधान को जलाकर उसको अपमानित करने की बात है यह राष्ट्र विरोधी कार्य है और इसके लिये उनको कड़ा से कड़ा दंड चाहिए। गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस का जो लोग बहिष्कार करते हैं ऐसे लोगों का राष्ट्रीयता में विश्वास नहीं है, ऐसे लोगों का भारत माता में विश्वास नहीं है, ऐसे लोगों का इस देश में विश्वास नहीं है, इसलिये ऐसे लोगों की नागरिकता समाप्त कर देनी चाहिए। मैं तो यहां तक मांग करूंगा कि जो लोग राष्ट्र ध्वज, भारत के संविधान, राष्ट्र गान और राष्ट्रीय पर्वों—स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस का अपमान करता है उसकी राष्ट्रीयता को तुरन्त समाप्त करना चाहिए। उनसे किसी भी प्रकार का समझौता करना अनुचित है और राष्ट्र के लिये घातक है। आज विदेशी ताकतें पूरे एशिया को छिन्न-भिन्न करने में लगी हुई हैं। अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान का बंटवारा कराया और पाकिस्तान का निर्माण हुआ। इसी तरह से उत्तरी कोरिया और दक्षिणी कोरिया, उत्तरी वियतनाम, लाओस, कम्पूचिया, चीन और फारमोसा आदि बने। आज सम्पूर्ण दुनिया में ऐसी शक्तियां अपनी कूट नीति से विघटनकारी तत्वों की मदद कर रही हैं और इससे सारी दुनिया में एक सपरेशन, अलगाववादी प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। आज भी हमारे देश में, चाहे वे सी० आई० ए० के एजेन्ट हों, चाहे किसी दूसरे देश के एजेन्ट हों जो भी इस तरह के कार्य-कलापों में लिप्त हैं उनके साथ कड़ाई से लिपटला चाहिए। कहीं भाषा के नाम पर, नार्थन-ईस्टर्न जोन के जो पहाड़ी प्रान्त हैं वहां अंग्रेजों ने क्या किया? उन्होंने वहां की भाषा को, चाहे पहाड़ी प्रान्तों की कोई भी भाषा हो उसको रोमन लिपि में कर दिया जब कि उन भाषाओं के लिये वहां के नागरिक आज भी चाहते हैं कि वह नागरी लिपि में हो और वे नागरी लिपि के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। मिजोरम के मुख्य मंत्री श्री लाल डेंगा से मैं पिछले दिनों संसदीय सलाहकार समिति में मिला था। उन्होंने कहा कि मिजोरम में मिडिल के स्तर पर हमने हिंदी को कम्पलसरी कर दिया और प्राइमरी स्तर पर भी चाहते हैं कि उसको कम्पलसरी कर दिया जाय। इसके लिये वह पर चार सौ अध्यापकों की जरूरत है। मैं भारत सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि जो लोग राष्ट्रीय धारा से जुड़ना चाहते हैं इसके लिये अगर उन्हें अध्यापकों या अन्य साधनों की, किताबों की या अन्य चीजों की आवश्यकता हो तो उसमें कमी नहीं होनी चाहिए ताकि वे एकजुट होकर इस राष्ट्र के गौरव और गरिमा के अपवर्धन में दत्तचित्त होकर अन्य लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ सकें। महोदय, हिन्दी भाषा या भारतीय भाषाओं के संबंध में बोलते हुए अभी मैंने कहा कि जो इस देश में विदेशी भाषा में काम करना चाहते हैं वे मात्र 2 प्रतिशत लोग हैं और वे इस देश की जनता को भरमाना चाहते हैं। उनका मूल लक्ष्य है कि यह देश समझ ही न पाये कि कोटि-कोटि जनता के लिये हम क्या करना चाहते हैं। हम गरीबों के लिए योजनायें बनाते हैं लेकिन फार्म अंग्रेजी में होता है। सामान्य आदमी या तो अंगूठा टेप आदमी है और अगर जानता

है तो वह अपनी क्षेत्रीय भाषा जानता है, अपनी मातृ भाषा जानता है या हिन्दी जानता है। उसको फार्म हम अंग्रेजी

3 P.M. में देते हैं। कड़ाई के साथ सरकारी महकमों में राजभाषा नियमों का पालन होना चाहिए और हर तरह से जनता के जीवन से जोड़ने के लिए हमें हिंदी का अधिक से अधिक, भारतीय भाषाओं का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार अनिवार्य रूप से राष्ट्रीयता का कर्म मान कर करना चाहिए। ब्यूरोक्रेट उस में बाधक बने तो उसको भी उठा कर फैंक देना चाहिये और उस में किसी तरह का समझौता सरकार को या किसी को भी नहीं करना चाहिये। लोक भाषा, लोकभेष और लोकभोजन यह तीनों जनजीवन से जुड़े हुए हैं और इन तीनों की मर्यादा प्रतिष्ठा अनिवार्यता आवश्यकता हर हालत में हमें स्थापित रखनी चाहिए। आज हमारा देश एटोमिक शक्तियों को जो दुनिया की बड़ी बड़ी विध्वंसकारी शक्तियां उनके हाथ मिलवा रहा है। यह गौरव 40 वर्षों में किसी को नहीं मिला था राजीव गांधी की सरकार को छोड़कर हमारे राजीव गांधी के नेतृत्व में जो निरस्त्रीकरण का प्रस्ताव रूस और अमरीका पास कर रहे हैं उनके नेतृत्व में और चारों ओर जब हम शांति का शंखनाद करने का अतीत का मूल मंत्र जो भारत का था

"नत्वहं कामयेराज्यं
नत्वहं पुनर्भवं
कामये दुःख तप्तानां
नामाते नाशनं"

यह जो हमारी ध्वनि थी इस ध्वनि को पुनः जब हम स्थापित करने जा रहे हैं तब कुछ ऐसी ताकतें जो इस देश के टुकड़े करना चाहती हैं चाहे खालिस्तान के नाम पर करना चाहें, चाहे और किसी आंदोलन के नाम पर करना चाहें, क्षेत्रीयवाद को बढ़ावा देना चाहे या भाषा के नाम पर, प्रांत के नाम पर, जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर, सम्प्रदाय के नाम पर जो ताकतें फन फैलाए हुए जहरीले सांप की तरह जगह-जगह उभर रही है उन्हें कुचल देने के लिए राष्ट्रीय गौरव और अखंडता (संरक्षण) उपबंध जो मिश्र जी लाए हैं इसकी सार्थकता सिद्ध हो सकती है। माननीय उपसभाध्यक्ष जी, राष्ट्र की अखंडता सर्वोपरि है और उस अखंडता में जगह-जगह दरार डालने की कोशिश की जा रही है। 1906 में जब झण्डा सत्याग्रह चला था उस समय मेडम कामा ने इस तिरंगे झण्डे की सृष्टि की थी। हमारे प्राणों से बढ़ कर के हमारा संविधान हमारी अस्मिता, हमारी गरिमा हमारे गौरव का, अतीत और वर्तमान, हमारे समस्त तत्वों का अखंड अंश है और उसको इस देश में अपमानित किया जाए, रौंदा जाए, फाड़ा जाए, जलाया जाए, हमारे महान संतों के धार्मिक ग्रंथों को भी फाड़ा जाता है, जलाया जाता है, उसकी गलत व्याख्या की जाती है, चाहे वह तुलसीदास की रामायण हो, चाहे बाइबल हो, गीता हो, कुरान हो या और भी कोई धर्म ग्रंथ हो। हमारे संविधान में सब धर्मों को मान्यता है और यदि कोई इसके प्रतिकूल कोई काम करता है तो वह चाहे कोई भी हो उसके साथ किसी तरह की ढिलाई देना राष्ट्रीयता के प्रति शंका की वस्तु होगी। अधिक न कह कर, हमें राष्ट्रीय ध्वज को अपनी खादी चेतना का प्रतीक और रेशमी झण्डा और खादी का झण्डा दोनों संग्रहालय में रखे हुए हैं यह एक कपड़े का टुकड़ा मान कर खादी राष्ट्रीयता और स्वतन्त्रता आन्दोलन के आवरण बना कर के तिरंगा झण्डा सत्याग्रहियों के हाथों में दिया गया, हमारे स्वतन्त्रता के दीवानों ने इसको ग्रहण किया अपने हाथों में, उसके पीछे रक्तिम आभा छलक रही है बलिदानों की और उस बलिदान का फल है कि जो हम रक्त प्रवाहित करते हैं भारत की स्वतन्त्रता के लिए उसकी रंगीनी 40 वर्षों के बाद अब देश में उस वक्त विकसित हो रही है और प्रगति के पथ पर हम अग्रसर हैं और ऐसे अवसर पर यदि

[डा० रत्नाकर पाण्डेय]

कोई छात्र राष्ट्रगान गाने से इन्कार करता है। और हमारी न्यायपालिका उसमें कोई छूट देती है तो यह सारे राष्ट्र के लिए चिन्ता का विषय हो जाता है। हम स्वतंत्रता तो देते हैं लेकिन उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता में कतई कहीं भी विश्वास नहीं होना चाहिए। इसके लिए सारे सदन को कोई न कोई उपाय ढूढंना चाहिए। अधिक न कहकर मैं इतना ही कहना चाहता हूं:

"बेजान बुतों के कारीगर कुछ होश करो,
देखो, पत्थरों में जब तक प्राण नहीं भरते,
सौगन्ध इसी की तुम्हें, न तुम संतोष करो।"

जहां असंतोष होता है, जहां आगे बढ़ने की, संघर्ष की तमन्ना होती है वहीं प्रगति होती है और प्रगति के पथ पर जब हम दुनिया के सबसे मजबूत राष्ट्र बनना चाहते हैं, सारी दुनिया को भारत की आध्यात्मिक, औद्योगिक और उर्वरा शक्ति से चमत्कृत कर देना चाहते हैं उस समय राष्ट्रीय गौरव और अखंडता को संरक्षण देना एक अनिवार्यता होनी चाहिए। उसके प्रति अगर कोई कलुषित भावना रखता है, उसके सम्मान के प्रतिकूल कोई काम करता है तो उसके साथ उतनी ही कड़ाई से पेश आना चाहिए जितनी कड़ाई के साथ हम किसी राष्ट्रद्रोही से या हत्यारे से पेश आते हैं। हत्या से कम महत्वपूर्ण यह अपमान हम नहीं मानते।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं शिव कुमार मिश्र जी के विधेयक का तहेदिल से समर्थन करता हूं। इन्होंने यह बड़ा ही सामयिक और महत्वपूर्ण विधेयक प्रस्तुत किया है इसीलिए मैं इसका समर्थन करता हूं।

DR. G. VIJAY MOHAN REDDY (Andhra Pradesh): Mr. Vice-Chairman, Sir, I wholeheartedly support the Bill and all the sections that are in the Bill and also the penal punishments that have been stated in the Bill. We know that with the adoption of the flag our freedom movement got great impetus and with our national anthem and with our national song, the freedom fighters also got great inspiration. As a student, I can well remember that in Madras Medical College during the Quit India Movement, the students hoisted the national flag on the Medical College Hostel building. The British Government used force to pull down the flag. But the students did not allow it. There were arrests and lathi-charge and any amount of repression but the students did not bend. Finally the students had to leave the hostel. About 250 students left the hostel and formed the Swarajya Bhavans wherever they resided. As groups they occupied houses called Swarajya Bhavans and they were the centres of activity. That is why the flag has been defended.

Sir, you know quite well that in Hyderabad during the time of the erstwhile Nizam there was an agitation and with the song of Vande Matram, thousands of students, workers and other patriots were arrested and students had to leave in great numbers and go and study in Nagpur Univesity because Vande Matram was prohibited. All this is there in the history of our national movement. And today our jawans are fighting under this flag to safeguard our boundaries. With the song of national anthem on their lips and the national flag flying over their heads, they are laying down their lives to defend our country to safeguards our borders. How can we forget and how can we allow any person or group of persons to do acts as has been mentioned, which are going to violate the sanctity of all these.

Then, Sir, another piece of work from the chapter of our national movement or freedom movement, I want to refer to in this connection. After all, we were in Madras Province. The Madras Province had An-

dhras, Tamilians, Kannadigas and also Malayalees. The other sections of the people were in Hyderabad, Nizam dominion; so also in Mysore State; so also in Travancore-Cochin State. Like that, the Britishers bifurcated us. To kill nationalism, they divided our people. And part of this national movement was to unite the people through Granthalaya movement, through literary movement, to see that fraternity relations are built up between the people speaking the same language so that communication may be easy and intercourse between person to person is easy. That was the evolution. That is how finally when the Congress Party formed provincial committees, they were known as Andhra Provincial Committee, Karnataka Provincial Committee, Tamil Nadu Provincial Committee and Kerala Provincial Committee. And this was the inspiration which made people united. People who were on both sides of the border, for example, the Telugus on the border of Nizam State, people on both sides were mixing together and building up common traditions; same way the Kannaadigas and the same way the Malayalees. That is why I say, as a part of this national movement, this movement also has grown where people were united linguistically. And after independence, when the question of administration or the constitution came up, the people fought for and achieved the linguistic States. When Andhra was formed, Nizam power had to be broken. Who did that job? It was the Telangana peasantry. It was those fighters who shed their blood fighting the Nizam razakars. Thousands shed their blood; thousands of villages were ravaged; thousands and thousands of women were molested; hundreds of thousands were arrested. In spite of that, Nizam power was broken and the Nizam had to yield and get out. In the same way, in Mysore State, the Maharaja had to bow down; in the same way, Sir, C. P. Ramaswamy and also the Travancore-Cochin Maharaja had to go. That is why I say behind all this, there was the great national movement and after independence, to awaken this spirit, there were leaders like Sri Potti Sriramulu who laid down his life for it. His cardinal principle was that people must be united; people must develop themselves and Andhra province is the birth-right of Andhras. In the beginning, there were hesitations; afterwards genuineness of the damand was recognised and Andhra State was formed and after dismemberment of Nizam, Vishal Andhra, or the present Andhra Pradesh was formed. In the same way, linguistic States all over the country have come about. Therefore, sanctity of linguistic States is also related to the sanctity of our Constitution, and our federal polity is also a feature which has to be understood. And behind it is the national movement; behind it is the sacrifice of thousands and thousands of patriots. Today is intolerable to hear somebody with a cursory knowledge of our freedom movement saying that it was a mistake to have these linguistic provinces. Somehow, I am not able to understand it. Those chapters which were written with the blood of our people cannot be wished away. This is not Lord Linlithgo trying to demarcate certain lines and saying that this is the administrative unit. Those days are gone; imperialism has been kicked out of the country. Today, nobody will be allowed to tamper with the sanctity of the Constitution; nobody will be allowed to tamper with the rights of the States enshrined in the Constitution.

Sir, how did imperialism come to this country? They came as traders, as businessmen. They secured concessions. They engineered disputes. They smashed our economic independence. They smashed our villages. They smashed the industries in the villages. They made India produce enough raw materials for the West. We broke this. Unfortunately, after we attained Independence, we were not able to stand by our commitments which we made to the peo-

[Dr. G. Vijay Mohan Reddy]

ple through the Directive Principles of the Constitution. We allowed wealth to grow. Monopoly has been built up in this country. Don't think that monopoly has been built up just like that. Behind this concentration of wealth, there is the sacrifice, the sweat and blood of the people. These institutions have come up. Once again, multi-nationals have come into the picture. Multi-nationals have been allowed to come in and once they come in, they entrench themselves deeply. We should be aware of this danger. They want to convert India into a single market. They want to break all the barriers. They want to dictate terms to the States. I warn the Government. This is not the way we can protect this country. We can protect the country only with the strength of all the people, on the basis of equality, on the basis of fraternity, on the basis of certain principles, not by allowing capitalists, exploiters and multi-nationals to make inroads. This is against our ethos. This will be resisted, along with protecting our national flag, along with protecting our national anthem and our federal Constitution which we have given to ourselves. We will also protect ourselves against the onslaught of imperialism, the onslaught of capital and build up in this country what our freedom fighters have always dreamed of, namely, a society of equals, where there will be no exploitation and where the head of every Indian will be held high, where knowledge will rule and India will advance and became a strong nation.

Sir, I want to say that we will uphold all the values which have been referred to in this Bill. We support the Bill wholeheartedly. At the same time, I would like to refer to the 'Explanation' given under clause 2 of the Bill. It says:

> "Comments expressing disapprobation or criticism of the Indian National Flag or the Constitution or any measures of the Government, with a view to obtaining an alteration of the Indian National Flag or an amendment of the Constitution, by lawful means do not constitute an offence under this section."

This has also to be understood. We have legal means, we have Constitutional means. If we want to bring about changes, it can be done only in this way. After all, India has flowered into a great nation, a democratic nation. We should see that the democratic values are preserved and whatever changes we require should be brought about only through the rule of law and within the framework of the Constitution. With these words, I support the Bill wholeheartedly. Thank you.

श्री राम चन्द्र विकल (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं हृदय से आभार मानता हूं आपका भी, माननीय मिश्र जी का भी जिन्होंने राष्ट्रीय गौरव और अखंडता (संरक्षण) विधेयक, 1987 को इस गैर सरकारी प्रस्ताव के द्वारा रख कर देश का ध्यान और इस सदन का तथा सरकार का ध्यान आकर्षिक किया है। उपसभाध्यक्ष महोदय, जैसा पूर्व वक्ता पांडे जी और रेड्डी साहब ने और उससे पहले जो इस पर विवाद हुआ, मैंने हरेक को बड़े ध्यान से सुना, हरेक की भावनाए देश की एकता और अखंडता से जुड़ी हुई हैं और एक से एक मार्मिक सुझाव आपने लिए हैं। मैं भी हृदय से एक बात कहना चाहता हूं जो देश की आजादी के लिए काम कर रहे थे हम ही नहीं करोड़ों देश के नर और नारी, तब हम लोगों को यह उम्मीद नहीं थी कि देश हमारे सामने आजाद हो जायेगा आज एक ही अभिलाषा और इच्छा है कि हमारे सामने देश बरबाद न हो जाये। मैं ऐसा क्यों बोल रहा हूं कि हमारे सामने देश बरबाद न हो जा क्योंकि आज हमारी उन भावनाओं का कुछ अभाव हो रहा है, जो आजादी पहले लोगों की भावनाएं थीं। इस सच्च से इंकार करना, मैं समझता हूं, सच्चाई क मानना ही नहीं होगा। आजादी से प हमारे धर्म विभिन्न थे, मगर राष्ट्र एक

था हमारे क्षेत्र विभिन्न थे पर राष्ट्र एक था, हमारी भाषाएं विभिन्न थीं मगर राष्ट्र एक था, हमारी जातियां विभिन्न थीं मगर राष्ट्र एक था, हमारी कई विभिन्नताएं थीं, मगर राष्ट्र एक था, राष्ट्र सर्वोपरि था। आज हम इन भावनाओं का अभाव देखते हैं।

यह जो संशोधन विधेयक पेश किया गया है मिश्रा जी द्वारा, मैं उसका हृदय से समर्थन करता हूं और थोड़ा सा याद दिलाना चाहूंगा उन पुरानी भावनाओं को साथ ही अपील भी करना चाहूंगा नई पीढ़ी से कि उन्हें उन पुरानी भावनाओं को साथ लेना ही पड़ेगा, अगर राष्ट्र-हित को सर्वोपरि रखना है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, 15 अगस्त, 1947 को जब देश आजाद हुआ तो मेरा भी यह सौभाग्य हुआ कि दिसरत थाना, जो आजकल नोयडा के नजदीक है, वहां झंडा फहराने का हमें अवसर मिला। आजादी की जो लहर थी, देखने लायक थी, सारा इलाका, कोई अपाहिज, लंगड़े-लूले या बूढ़े गांव में रह गए हों, मगर उन दिनों आजादी को देखने का जो उत्साह था, उसका वर्णन करना भी कठिन है और समझना भी कठिन, सारा इलाका उस थाने के ऊपर जमा था और लोग यह देख रहे थे कि तिरंगा झंडा किस तरह से अपना, यूनियन जेक को हटाकर आया। हमारे जीवन के त्याग, तपस्या, बलिदानों का फल पूरा हमें मिला, उस दिन घर-घर में 15 अगस्त, का त्यौहार मनाया गया। जिस तरह से हमारे लोग ईद और दीवाली का पर्व मनाते हैं, उसी तरह उस दिन घर-घर में यह त्यौहार मनाया गया। मगर आज इन राष्ट्रीय-पर्वों के महत्व को कुछ कम समझा जा रहा है और खाली कम ही नहीं समझा जा रहा है बल्कि कहीं-कहीं तो इनका विरोध करने का साहस भी कुछ लोग कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में क्या इन राष्ट्रीय-पर्वों, राष्ट्रीय भावनाओं के बारे में कुछ पुनर्विचार करने की जरूरत है या नहीं? इसी तरह से यह झंडा जलाना, संविधान की अवहेलना करना, राष्ट्रीय-पर्वों की अवहेलना करना, राष्ट्रीय-गानों और राष्ट्रीय-गीतों की अवहेलना करना, यह सारी चीजें मिश्रा जी ने इसमें जोड़ रखी हैं। इन सब के ऊपर हमको थोड़ा बहुत गंभीरता से विचार करना होगा।

उपसभाध्यक्ष महोदय, पाण्डेय जी ने कुछ गाने बताए। मैं भी जीवन भर गाने गाता रहा हूं, अगर मैं उनका एक-एक छोटा-छोटा नमूना बताऊं तो एक किताब लिखी जा सकती है, भरी जा सकती है। "हम भारतमाता की सेवा में तन-मन-धन लगा दें" इसको सारे लोग गाया करते थे प्रभात-फेरी में और इस गाने के पूरे भाव को अगर समझें तो यह है कि देश को आजाद कराके ही रहेंगे, यह भावना भरी जाती थी इस गाने के द्वारा।

उपसभाध्यक्ष महोदय, अमन सभाई लोग जब कहा करते थे कि यह तिरंगे झंडे से आजादी नहीं ली जाएगी तो हम गाया करते थे —

"हे मादरे हिन्द गमगीन न हो,
दिन अच्छे आने वाले हैं
आजादी का पैगाम तुम्हें
हम जल्द सुनाने वाले हैं।"

निराश कभी नहीं होते थे और गाते —आजादी के दिन भारतमाता तेरे आने वाले हैं। निराश नहीं होने देते थे। इसी तरह से गाया करते थे —

"सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।"

और गाया करते थे —

"अपने दिल के बलबले है और
न अरमानों की धूम,
वक्त मर मिटने की हिम्मत
अब दिले बिस्मिल में है .."

[श्री रामचन्द्र विकल]

मर-मिटने की हिम्मत है अपने मुल्क के लिए । यह भावनायें क्या कम थीं, जिन्होंने देश को आजाद कराया । यह बहुत ऊंची-ऊंची भावनायें थीं । भगत सिंह जब फांसी के तख्ते पर जा रहा था, तो उन्होंने उस वक्त गाया था—

"खुश रहना भारतवासियों
अब हम तो सफर करते हैं..."

और इस तरह गाकर फांसी के फंदे को चूम लिया । मैं उन सारी भावनाओं को कहां तक गिनाऊं । हमारी बहू-बेटियां भी गाना गाया करती थीं—"...लेगा मुल्क आजादी...", मेरी लड़की भी गाया करती थी । एक बार गाना गाते थे हम—

"उठ जाग मसाफिर भोर भई,
अब रैन कहां सोवत है ....."

सुबह चार बजे ही प्रभात फेरी में सारे देश में यह गाया जाता था और हम गाते थे—

"जो सोवत है सो खोवत है
जो जागत है सो पावत है..."

इस तरह के गाने गाते थे प्रभात फेरियों में ।

चौधरी तेज सिंह कहा करते थे, "कोई जगता हो तो सुने, जगत में टेर भिखारिन की ।" भिखारिन भारत माता पेश किया करते थे । भारत -माता को आजादी के लिए क्या-क्या चाहिए—जवानों के सिर, बलिदान, कुर्बानी । ये गाना बड़ा मार्मिक है। "उनीदें भारत अब तो आंखें खोल, तेरे सोने में हजारों साल गए, तेरी भूमि गयी तेरी भूमि के भूपाल गए । तेरी सतलज, ब्यास, रावी, चिनाव, और झेलम के जावी जलाल गए ।" ये उन्हीं का गाना था । ये गांव के गुणियों के गाने सुना रहा हूं । "आजादी आ भारत की ओर, आह्वान कर रहे ये 40 करोड ।" ऐसे गाने गाते थे । ये चौधरी तेज सिंह जब मृत्य शय्या पर थे तो सारा इलाका जमा था । वे हमारे घर आते थे । इलाके के लोगों ने कहा अपनी आखिरी इच्छा बताओ । वे बेहोश थे । उन्हें जगाया गया झंझोडकर जगाया गया तो बोले मेरी आखिरी इच्छा पूछते हो—ये बताओं मेरी इच्छा को पूरा करा दोगे ? मरते वक्त व्यक्ति की इच्छा पूरी करना प्रतीज्ञा माना जाता है । लोगों ने कहा, दाऊ-ताऊ, चाचा हम इसे पूरा करेंगे, आप अपनी इच्छा बताओ । उनकी आखिरी इच्छा यही थी कि "अंग्रेजी हुकूमत के पाए हिलते तो मैंने देखें, गिरते नहीं देखे ।" अगर कोई दूसरे आदमी से उसकी अंतिम इच्छा पूछते तो वह कहता कि मेरे बाल-बच्चों, खानदान और कुटम्ब का ख्याल रखना । मगर मेरे देश को आजाद करा दोगे यह चौधरी तेज सिंह की आखिरी तमन्ना थी ।

हैदराबाद सत्याग्रह जिसकी चर्चा रेड्डी साबह कर रहे थे । यह वहां की जातियों के खिलाफ एक आन्दोलन था । आजादी के उस मूवमेंट के वक्त में इसको हिंदू-मुस्लिम रंग देने की कोशिश की गयी । गांधी जी भी कुछ खामोश हो गए । कुंवर सुखलाल आर्य, मसाफिर आर्य समाज के क्रांतिकारी उपदेशक, कांग्रेस आन्दोलन में अनेकों बार जेल गए, सत्याग्रह किया । वे गाना गाते थे, "आकर गांधी ने भारत में कैसा चर्खा चलाया है, अंग्रेजों की हुई तबाही, शोक लंदन छाया है ।" ऐसे गाने गाया करते थे । वे कांग्रेस के आदमी आर्य समाजी होने के नाते हैदराबाद में भी चले गए । गांधी जी खामोश थे, उस समय कितनी हिम्मत थी, लोगों में बात करने की । उन्होंने कहा, "ये क्या हैदराबाद में हो रहा है, मैंपर का आलम वफा हो रहा है । फकीरों से जेलें भरी जा रही हैं, फक्त जिनका तबली हक मुद्दा है । खताबाद होते तो चाहे जो होते, जुल्म और ज्यादती फिर हमारी इनायत में बिचारी गांधी, मगर ये तो कह दे कि वह रो रहा है । यह गांधी जी को कहने की हिम्मत कुंवर सुखलाल में थी । आज उस सत्याग्रह को राजनीतिक आन्दोलन मान लिया गया है । उनको पेंशन दी जा रही है । इस तरह हिम्मत वाले लोग थे उन दिनों जिनके सामने सिर्फ देश था । और कोई भावना नहीं थी ।

यह कुछ मैंने उस समय के लोगों की भावना गिनाने की कोशिश की है । अब मैं नयी पीढी से कुछ अपील करना चाहूंगा ।" सत्य और अहिंसा से देश की आजादी लेंगे, गांधी जी अटल रहेंगे ।" सारी दुनिया को गांधी जी ने दिखा दिया कि अहिंसा से आजादी कैसे ली जाती है । हमारे देश में चाहे जो काम किया गया हो, मगर मैं जब मास्को गया भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता की हैसियत से तो वहां गांधी जी पर हमारे भाषण करवाये गए । रूस में जहां कि गांधी जी पर रिसर्च हो रही है, वहां भी हमारे भाषण करवाये । जहां गांधी जी की मूर्ति लगी वहां भी भाषण करवाये भारत-रूस मैत्री संघ वालों ने भी भाषण करवाये मुझसे वहां एक ही सवाल पूछा गया कि गांधी जी की विशेष बात क्या थी ? मैंने कहा गांधी जी की तो हर बात विशेष थी । उन्होंने कहा , कोई विशेष बात बताइये ? मैं कहने लगा, अगर गांधी जी की विशेष बात पूछनी हो तो वह यह थी कि वे अपनी गलती को सार्वजनिक रूप से मानते थे, पश्चाताप करते थे। भविष्य में उस भूल को करने की कोशिश नहीं करते थे, । काश यदि यह बात दुनिया के सारे लोग, चाहे वे धार्मिक हों, राजनीतिक हों, मानने लगें, अपनी गलतियों को सार्वजनिक रूप से मानने लगें तो कितना अच्छा हो । ऐसा अगर लोग करने लगें , अपनी गलतियों को मानने लगें, वर्ल्ड पीस, विश्व शांति हो सकती है , यह गांधी जी की भावना थी ।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की भावना भी मैं आपको बता देना चाहता हूं, उन्होंने आइ० एन० ए० की फौज बनाई, दूसरे देशों में बनाई, आइ० एन० ए० के बलिदान की कहानी भी भुलाई नहीं जा सकती । सुभाष चन्द्र बोस की आखिरी इच्छा थी—

"तुम पैगाम मेरा सुनो हिन्दुस्तान वालो—
गुलामी में पडे इस देश को आजाद करा लेना,
वतन से दूर हूं लेकिन वतन पर जान देता हूं,
वतन आजाद होने पर हमें भी याद कर लेना ।"

यह कह कर वे चले गए ।

जवाहरलाल जी की आखिरी इच्छा थी ? उनका आखिरी पैगाम था कि "मरने के बाद मेरी भस्मी किसानों के खेतों पर गिराई जाए ।" उन्होंने यह सपना लिया वे जानते थे कि इस देश की राजनीतिक आजादी के बाद इसकी रीढ आर्थिक आजादी के लिए किसान है । यदि आर्थिक आजादी नहीं रहेगी तो देश फिर गुलाम हो सकता है । राजनीतिक आजादी छीनी जा सकती है । इस लिए आर्थिक आजादी के लिए किसानों की खुशहाली जवाहरलाल जी की तमन्ना थी । सन 1930 में सुलतानपुर जिले में पंडित जवाहरलाल जी गये । वहां किसानों के तन पर एक लंगोटी के अलावा कुछ नहीं था । जब जवाहरलाल जी किसानों के सामने गए तो उनके आंसु देखकर वे समझ गए उनकी आंखें डबडबा आई थीं । वे मनोविज्ञानी थे । वे समझ गए कि किसान भाइयों के आंसु उनकी दशा का चित्रण कर रहे हैं । उन्होंने कहा मैं यहां आपको कुछ देने के लिए नहीं आया हूं, बल्कि कुछ लेने के लिए आया हूं, मैं जानता हूं तुम मुझसे कुछ चाहते हो । लेकिन आज मैं आपकी शुभकामनायें और आपका आशीर्वाद लेने आया हूं । इस देश के किसानों की शुभकामनाऐं मिलेंगी और हमें आजादी मिल जाएगी तो मैं आपके आंसू पोंछ सकूंगा । यह उन्होंने सन 1930 में कहा था । इसीलिए उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं का सहारा लेकर बडे बडे डैम बनाए, भाखडा नंगल बनाया । स्टील प्लांट बनाए, बड़ी-बड़ी योजनायें बनाई । यह भावना आजादी के पहले की थी । आजादी के पहले हमारे देश के नेता जानते थे कि स्वदेशी और खादी का प्रचार करो, पैदावार बढाओ, तालाब खुदवाओं, टट्टी साफ करते थे, गांवों में सफाई कराते थे और आजादी का मूवमेंट भी चलाते थे । लोग यह समझते थे कि राजनीतिक आजादी काफी नहीं है; आर्थिक आजादी भी चाहिए ।

सरदार पटेल जब मृत्यु शैय्या पर थे जो हमारे सी० बी० गुप्ता जो उस समय मिनिस्टर थे, उनके पास गए थे ।

[श्री राम च द्र विकल]

उन्होंने बताया कि सरदार पटेल जब मृत्यु शैय्या पर थे तो उन्होंने कहा कि मैं इस दुनिया में ज्यादा देर रहने वाला नहीं हूं, मैं दुनिया से जा रहा हूं, लेकिन एक बात कहकर जा रहा हूं। इस देश को कभी बाहरी दुश्मनों से खतरा नहीं हुआ। जब भी खतरा हुआ, देश के अंदर के दुश्मनों से हुआ। इनसे सावधान रहो। एक से एक बड़ी भावना जुड़ी हुई।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि रफी अहमद किदवई ने अनेक बार कहा 'अपने से ऊपर, अपनी कोम से ऊपर, अपने मजहब के ऊपर, अपने जीवन से ऊपर, अपने राष्ट्र को समझो।" 'खुदाई खिदमतगार बनकर मुल्क से गुलामी की जंजीरों को तोड़ेंगे" यह भावना थी खान अब्दुल गफ्फार खां की।

इंदिरा जी की भावना आपको मालूम हैं। मरने से दो दिन पहले उन्होंने कहा था– 'अगर मेरा बलिदान हुआ तो मेरे खून का एक-एक कतरा इस देश की एकता के लिए काम आयेगा।" इन चन्द भावनाओं को मैंने इसलिए कहा क्योंकि जो आजादी के लिए मरने वाले परवाने थे, वे पहले जलना पसंद करते थे, फिर कुछ बाद में हमारी बीवी, हमारे बच्चे हमारा जीवन राष्ट्र के लिए लिए समर्पित है, इस भावना को आज अभाव नजर आता है। लेकिन मैं कहना चाहूंगा कि हमारी भावनायें क्षीण होती जा रही हैं। हम इन छोटे दायरों में घिर रहे हैं। मैं तो कहना नहीं चाहता। मैं अमेरिका में गया था जब राजीव जी थे। सरदार तेजा सिंह हमारे साथ थे, असेम्बली के मैम्बर थे, उन्होंने हमें अपने घर पर खाने के लिए बुलाया था। खाना खाने के बाद उन्होंने हमें एक दर्द भरी आवाज में कहा कि सात समुद्र पार वाशिंगटन में जो हिन्दुस्तानी बैठे हैं उनके दिल में क्या गुजरती है जब हिन्दुस्तान की कोई खराब खबर, झगड़े की, दंगे की, मारकाट की, लूटपाट की, हिन्सा की अखबारों में पढ़ते हैं, या रेडियो पर सुनते हैं। उन्होंने बताया कि विदेशियों के सामने हमारा सर नीचे हो जाता है। यह भारत के बाहर बैठे हुए हिन्दुस्तानी भाइयों का हाल है। शिवराम मुखिया का किस्सा मैंने कई बार आप को सुनाया है। वह होली फाल्गुन के महीने में मनाया करते थे वह वहां सुनाया करते थे वह मेरे रिश्तेदार का गांव है। मेरी बहन का वहां रिश्ता हुआ है। वह होली मनाते-मनाते अकेले बैठे-बैठे एक बात बोला करते थे जिसका अर्थ मैं उस समय नहीं समझता था लेकिन मैं अब सोचता हूं वह क्यों बोला करते थे। वह बोलते थे—द्वीपो में द्वीप एशिया सबसे अच्छा। एशिया द्वीप में हिन्दुस्तान देश सबसे अच्छा। हिन्दुस्तान में मोलालिक मुदलका आगरा हमारे प्रदेश का नाम था, युनाइटेड प्रविन्स संयुक्त प्रदेश आगरा सबसे अच्छा और इस प्रदेश में मेरठ कमिश्नरी सबसे अच्छी। मेरठ कमिश्नरी में बुलन्दशहर जिला सबसे अच्छा। बुलन्दशहर जिले में सिकन्दराबाद तहसील सबसे अच्छी। सिकन्दराबाद तहसील में दनकोर परगना सबसे अच्छा और दनकोर परगना में असतोली गांव सबसे अच्छा। असतोली गांव में शिवराम मुखिया सबसे अच्छा। आज जब हम शिवराम मुखिया की बात समझते हैं तो बहुत से लोग ऐसे दिखाई देते हैं जो यह कहते हैं हमारी पार्टी अच्छी है, प्रांत हमारा अच्छा है, हमारी भाषा अच्छी है। हमारा धर्म अच्छा है। राष्ट्र अच्छा है यह लोगों से ओझल होता जा रहा है। काश इस राष्ट्र को अपनी नयी पीढ़ी अपनी आंखों से ओझल न कर पाये। हम राष्ट्रवादी होकर भी व्यक्तिवादी बन गए। अगर ऐसा ही रहे तो अंदर और बाहर की सारी चुनौतियों का मुकाबला करना कठिन हो जाएगा। चाहे अंदर की चुनौती हो या बाहर की चुनौती हो हमें इस राष्ट्र को अपना समझ कर मुकाबला करना होगा। भारत के दुश्मन भारत को तब तक खराब नहीं कर सकते, तोड़ नहीं सकते जब तक हमारे अन्दर के कुछ जयचंद लोग बाहरी ताकतों से मिल नहीं जाते। आज एक जयचंद नहीं लाखो, करोड़ों जयचंद नजर आते हैं इस देश में।

आप को हम से ज्यादा जानकारी है उपसभाध्यक्ष महोदय । इन जयचंदों से देश को स्वाधीन कराना होगा । इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि हमारे मिश्र जी ने जो संशोधन विधेयक पेश किया है इसे पारित होना चाहिए, सर्वसम्मति से पारित होना चाहिए । इसको मंजूरी मिल जानी चाहिए । इसका कोई विरोध कहीं से भी हुआ ही नहीं । अगर हम राष्ट्रीय अखंडता, एकता चाहते हैं तो यह सर्व-सम्मति से पास होना चाहिए । यही मेरा कहना है । मैं फिर आपका आभार मानता हूं कि मिश्र जी के ऐसे महत्वपूर्ण विधेयक पर हमको सुनने और सुनाने का मौका दिया ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, इस सदन के विद्वान सदस्य श्री शिव कुमार मिश्र ने राष्ट्रीय गौरव और अखडता (संरक्षण) विधेयक, 1987 जिस भावना से प्रस्तुत किया है उसका मैं समर्थन करता हूं ।

आज देश की राष्ट्रीय एकता और अखंडता खतरे में है । बहुत से ऐसे हिंसात्मक कार्य इस देश में हो रहे हैं जिससे देश का गौरव समाप्त होने की ओर चला जा रहा है । इसलिए जो राष्ट्रीय गौरव की चीजें हैं, जैसे हमारा राष्ट्रीय गान—'जन-गन-मन' जिसके प्रेरक गुरुवर रवीन्द्र नाथ टैगोर थे, या राष्ट्रीय झंडा जो है इनका सम्मान करना ही चाहिए । जो लोग इनका सार्वजनिक रूप से अपमान करते हैं, सम्मान नहीं करते हैं वे राष्ट्र के प्रति अपनी देशभक्ति प्रदर्शित नहीं करते हैं

तिरंग झंडा जिसकी चर्चा इस सदन में की गयी है, जिस तिरंगे झंडे के सिलसिले में हमारे मित्र डा० रत्नाकर पाण्डेय ने कानपुर के शाम लाल पार्षद की चर्चा की, जिनका गीत उन्होंने सुनाया—विश्व विजयी तिरंगा प्यारा झंडा ऊंचा रहे हमारा । कानपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । वह महानगर पालिका के सदस्य भी हुए थे इसलिए पार्षद कहा जाता था, उनकी मृत्यु हो चकी है । उनका जो राष्ट्रीय गान था वह हमारे देश की आजादी के दिनों में हमारे नौजवानों को प्रोत्साहित किया करता था । इसी झण्डे को हाथ में लेकर हमारे नौजवान इस राष्ट्रीय गान को गाते हुए पुलिस की गोलियां खाते थे लाठियां खाते थे, लेकिन फिर भी झण्डे को झुकने नहीं देते थे । कितने ही लोगों ने इस गाने को गाते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। वह गान है—

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा । टेक

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम-सुधा
बरसाने वाला;
वीरों को हरषाने वाला, मातृभूमि का
तन-मन सारा । झंडा०

स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े
जोश क्षण-क्षण में;
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाए
भय संकट सारा । झंडा०

इस झण्डे के नीचे निर्भय, लें स्वराज हम
अविचल निश्चय;
बोलो भारत-माता की जय, स्वतंत्रता
हो ध्येय हमारा । झंडा०

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर
बलि-बलि जाओ ;
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा
भारत देश हमारा । झंडा०

इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले
ही जाए;
विश्व-विजय करके दिखलाएं,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा । झंडा०

[श्री सत्य प्रकाश मालवीय]

विश्व विजय दिखलाने से उनका आशय विश्व को जीतने से नहीं था, बल्कि शांति और अहिंसा से था । हमारी संविधान सभा में जब यह विषय आया तो 22 जुलाई 1947 को इसी राष्ट्रीय झण्डे के संबंध में संविधान सभा में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया था और वह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया था । अपने भाषण में पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने और संविधान सभा में जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, देशभक्त थे, उन्होंने तिरंगे झण्ड का समर्थन किया और कहा कि तिरंगे झण्डे से मिलता हुआ राष्ट्रीय झण्डा रखा जाये जिसमें तीन रंग हों और बीच में चक्र हो। उस चक्र में 'सत्यमेव जयते' को भी स्वीकार किया गया था । अपने भाषणों में इन नेताओं ने, देशभक्तों ने, कहा था कि चूंकि इसी झण्डे को लेकर हम आगे बढ़े हैं और यही झण्डा हमें आजादी दिलाने में सहायक रहा है, इसलिए इसी झण्डे को राष्ट्रीय झण्डा स्वीकार करना चाहिए । पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने अपने भाषण में इसकी चर्चा की । 22 जुलाई, 1947 को जो प्रस्ताव रखा गया था वह यह था—

"Resolved that the National Flag of India shall be a horizontal tricolour of deep Saffron (Kesri), white and dark green in equal proportion. In the centre of the white band, there shall be a wheel in navy blue to represent the Charkha. The design of the wheel shall be that of the wheel (Charkha), which appears on the abacus of the Sarnath Lion capital oof Ashoka."

मिश्र जी ने राष्ट्रीय स्तम्भ की चर्चा नहीं की है । राष्ट्रीय स्तम्भ को बाद में स्वीकार किया गया । राष्ट्रीय स्तम्भ के सिलसिले में भी संविधान सभा में 12 मई, 1949 को अशोक स्तम्भ को राष्ट्रीय स्तम्भ के रूप में स्वीकार किया गया । इसी प्रकार से 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा के तत्कालीन अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने जन गण मन..." के संबंध में वक्तव्य दिया और इसको राष्ट्रीय गान के रूप में स्वीकार किया गया । यह बात बिलकुल निर्विवाद है कि राष्ट्रीय गौरव की चीजों का अपमान नहीं होना चाहिए और इसीलिए सन् 1971 में एक कानून बना और उसी कानून को रिपील करने की बात कही गई है । दी प्रिवेन्सन आफ इन्सलट्स टु नेशनल आनर एक्ट, 1971 की इसमें चर्चा की गई है । यह एक्ट इसी दृष्टि से बनाया गया था । बाद में हमारे संविधान में संशोधन किया गया । हमारे संविधान में मौलिक अधिकारों की तो चर्चा थी, लेकिन मौलिक कर्त्तव्यों की चर्चा नहीं थी । संविधान संशोधित हुआ और पार्ट 4(ए) में, फण्डामेन्टल ड्यूटीज के अनुच्छेद 51ए में लिखा गया :

"It shall be the duty of every citizen of India to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem."

मान्यवर, मैं यह निवेदन करना चहता हूं कि यहां पर श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के अंतिम भाषण की चर्चा की गई है जो उन्होंने उड़ीसा में दिया था और उसके दूसरे या तीसरे दिन उनकी बर्बर हत्या कर दी गई थी । यहां पर सरदार पटेल की अंतिम इच्छा की भी चर्चा की गई है, पंडित जवाहरलाल नेहरू की अन्तिम इच्छा की भी चर्चा की गई है, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का भी नाम लिया गया है । मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि कभी-कभी राष्ट्रीय झण्डे का अनादर भूलवश भी कर दिया जाता है । राष्ट्रीय झंडा जो कांग्रेस पार्टी का झंडा है उससे मिलता-जुलता है इसलिए मेरा सुझाव है कि महात्मा गांधी की अंतिम इच्छा का पालन करते हुए...

श्री राम चन्द्र विकल : पार्टियों के झंडे का भी अपमान न करें ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : आप महात्मा जी की अंतिम इच्छा का पालन करिये । आपने इंदिरा जी, जवाहरलाल जी और सरदार पटेल के बारे में कहा लेकिन जिन गांधी जी का वे नाम लेते थे, महात्मा गांधी की बर्बर हत्या दिल्ली में 30 जनवरी, 1948 को हुई, इसके ठीक एक दिन पहले, 29 जनवरी, 1948 को

गांधी जी ने एक प्रस्ताव तैयार किया था अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में रखने के लिए कि कांग्रेस को समाप्त कर देना चाहिए। गांधी जी के प्राइवेट सेक्रेटरी प्यारेलाल जी ने कहा कि :

"A new constitution for the Indian National Congress was prepared by Gandhiji on 29th January, 1948, a day before his death. Being his last piece of writing it may be taken as his "Last Will and Testament."

राष्ट्र के नाम बापू की अंतिम वसीयत with your permission I would like to read:

"Though split into two, India having attained, political Independence through means devised by the Indian National Congress, the Congress in its present shape and form *i.e.*, as a propaganda vehicle and parliamentary machine, has outlived its use. India has still to attain social moral and economic independence in terms of its seven hundred thousand villages as distinguished from its cities and gowns. The struggle for the ascendency of civil over military power is bound to take place in India's progress towards its democratic goal. It must be kept out of unhealthy competition with political parties and communal bodies. For these and other similar reasons, the A.I.C.C. resolve to disband the existing Congress organisation and flower into a Lok Sevak Sangh under the following rules with power to alter them as occasion may demand."

मैं ज्यादा पढ़कर सदन का समय बरबाद नहीं करना चाहता । लेकिन मैं निवेदन करना चाहूंगा कि जो कांग्रेस आजादी की लड़ाई का माध्यम थी, जिस कांग्रेस के माध्यम से देश की आजादी की लड़ाई लड़ी गई, जिसके झंडे के नीचे लोग शहीद हुए, उस कांग्रेस के संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सुझाव दिया था और वे इस संबंध में एक प्रस्ताव रखने वाले थे और अगर वे जीवित होते तो वे यह प्रस्ताव निश्चित रूप से रखते कि कांग्रेस को समाप्त कर दिया जाये । उन्होंने कहा था कि कांग्रेस क्योंकि आजादी दिलाने का माध्यम थी और देश को आजादी प्राप्त हो गई है, देश का बंटवारा हो चुका है इसलिए कांग्रेस को खत्म कर देना चाहिए, कांग्रेस को इस प्रकार से नहीं रहना चाहिए । अन्य जो राजनैतिक दल हैं, अन्य जो साम्प्रदायिक संस्थायें हैं उनके साथ कांग्रेस प्रतियोगिता करे, कम्पीटीशन करे यह उचित नहीं इसलिए गांधी जी ने सुझाव दिया था कि कांग्रेस पार्टी को खत्म कर देना चाहिए । उसको केवल सार्वजनिक सेवा का माध्यम ही बना रहना चाहिये । तो मेरा निवेदन यह है कि आपको राष्ट्रपिता महात्मा जो लोग आजकल गांधी जी का नाम लेते गांधी के सुझाव को मान लेना चाहिये हैं, वे ही आज गांधी जी के हर मूल्य का प्रतिदिन और प्रति घंटे हत्या करते हैं, उनके विचारों की हत्या करते हैं । इसलिये मेरा आपके माध्यम से नम्र निवेदन है कि कांग्रेस पार्टी जिसने देश को आजाद कराया उस पार्टी के नेताओं को आज पुनः सोचना चाहिए और इस पर पुनर्विचार करके जो गांधी जी के विचार थे, उन पर अमल करना चाहिए । उन्होंने जो प्रस्ताव तैयार किया था, जिसको वे रखने वाले थे उसको पारित करके आप राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अन्तिम इच्छा की ही पूर्ति करेंगे । मान्यवर, आप तो वकील है । आप जानते हैं कि डेथ डक्लेरेशन बहुत पवित्र चीज होती है । डेथ डेक्लरेशन को बहुत पवित्र माना जाता है । इसलिए जो बापू की अंतिम इच्छा थी उसका आपको पालन करना चाहिए ।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि बहुत से प्रदेशों में लोगों में किसी बात को लेकर रोष होता है, आंदोलन होते हैं और हिंसा भी हो जाती है और ऐसे समय पर बहुत से लोग मूलवश यह जो राष्ट्रीय झंडा है इसका अपमान कर लेते हैं । वह ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि ये वह समझते हैं कि यह कांग्रेस पार्टी का झंडा है । इसलिए मैं सुझाव देना चाहता हूं कि जो कांग्रेस पार्टी का झंडा है उसमें परिवर्तन करना चाहिए और उसमें इस प्रकार से परिवर्तन किया जाना चाहिए ताकि जो राष्ट्रीय झंडा है उससे वह मेल न खाये

[श्री सत्य प्रकाश मालवीय]

कैसा झंडा हो, क्या हो यह एक अलग प्रश्न है लेकिन इस सिलसिले में मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि एक कानून इस संसद में इस देश को सरकार को रखना चाहिये कि जो हमारे देश का राष्ट्रीय झंडा है उससे मिलता जुलता कोई दूसरी पार्टी का झंडा या किसी संस्था का या राजनीतिक दल का झंडा नहीं होना चाहिये। हमने देखा है कि जो राष्ट्रीय स्तम्भ है जिसकी चर्चा मैंने पहले भी की है, जिस कुर्सी पर आप विराजमान है जिसके ऊपर यह राष्ट्रीय स्तम्भ लगा हुआ है, संसद में जब हम आते हैं तो राष्ट्रीय स्तम्भ बाहर लगा हुआ है इसी प्रकार से किसी विधानसभा में जाएं तो वहां भी राष्ट्रीय स्तम्भ लगा होता है, हमारी जो संविधान की पुस्तिका है इस में राष्ट्रीय स्तम्भ है लेकिन दिल्ली की सड़कों पर या प्रदेशों के राजभवनों में बहुत सी गाड़ियों क हम देखते हैं, कारों को देखते हैं जो शायद राष्ट्रपति भवन या राज्यपाल भवनों की होती हैं जिनमें राष्ट्रीय स्तम्भ जहां पर नम्बर प्लेट लगा होता है वहां पर लगा होता है इसलिए मैं सरकार से यह कहना चाहता हूं कि राष्ट्रीय स्तम्भ का स्थान गौरव का स्थान है। राष्ट्रीय स्तम्भों को किसी गाड़ी में नम्बर प्लेट लगाने वाले स्थान पर नहीं लगाया जाना चाहिये यह शोभा नहीं देता है यह इसका अपमान है और इस सिलसिले में भी सरकार को विचार करना चाहिये और इसके नियमों के अन्दर कुछ परिवर्तन करना चाहिये। मिश्र जी ने जो विधेयक में बहुत से संशोधन रखे हैं उनकी काफी बातों से मैं सहमत हूं लेकिन एक बात से मैं सहमत नहीं हूं जहां पर इन्होंने धारा 4 की जो एक्सप्लेनेशन है उसके स्पष्टीकरण में कहा है कि :

"Wearing of a black badge or the like, on the occasion or day of a National Function, shall be deemed to be an act indicative of non-co-operation with the National Function."

अगर उसको इस विधेयक में जोड़ा जाए तो यह मतलब निलकता है तो ऐसे व्यक्ति को सजा भी हो सकती है। यह स्पष्ट नहीं है यह क्या चीज होगी। दूसरा यह है कि नेशनल फंक्शन में इस बात की परिभाषा है कि नेशनल फंक्शन हो कोई केन्द्र सरकार या प्रदेश की सरकार, नगरपालिका या स्थानीय निकायों का हो इनको लोग नियुक्त करते हैं वे भी नेशनल फंक्शन में आते हैं। मैं इस बात से सहमत नहीं हूं, कि अगर राष्ट्रीय फंक्शनों के दिनों कोई आदमी काला बैज लगा दे तो वह राष्ट्र का अनादर करता है राष्ट्रीय झंडे का अनादर करता है। आज मान्यवर इस बात की भी इस देश में मांग उठी है और सरकार ने बराबर सहमति व्यक्त की है इस बात के लिए कि बहुत सी साम्प्रदायिक संस्थाएं हैं जो इस देश में साम्प्रदायवाद का विष फैलाती हैं और जिसके कारण इस देश की राष्ट्रीय एकता और अखंडता को खतरा उत्पन्न होता है उन पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिये। आप जानते हैं कि पंजाब जल रहा है आतंकवाद पंजाब पर हावी है रोज क ई दिन ऐसा नहीं जाता है जब 15–20 या 30 निर्दोष लोगों का सामूहिक नरसंहार न होता हो। इसके बहुत से कारण हैं इस समय मैं उन कारणों में नहीं जाना चाहता हूं लेकिन इस देश के लोगों ने बार-बार इस सदन में भी और बाहर भी यह मांग की है कि धार्मिक स्थलों का उपयोग राजनीतिक कार्यों के लिए नहीं होना चाहिये। धार्मिक स्थलों पर बैठ कर कोई ल ग अपराध करते हैं राष्ट्रविरोधी काम करते हैं तो इसकी इजाजत किसी को नहीं होनी चाहिये। इस सम्बन्ध में सरकार को एक विधेयक लाना चाहिये इस सदन में बार-बार इस बात का आश्वासन भी दिया गया है कि सरकार की इच्छा यह है कि धार्मिक स्थलों का उपयोग राजनीतिक कार्यों के लिए नहीं होना चाहिये यह अपराध है। मैं समझता हूं कि सरकार को इस सम्बन्ध में सोचना चाहिये और इस सम्बन्ध में विधेयक लाना चाहिये। मिश्र जी के इस विधेयक में बहुत सी बातों की

चर्चा की गई है । शायद 1986 में केरल के किसी विद्यायलय के कुछ बच्चों ने राष्ट्रगान गाने से इंकार कर दिया था और उसके बाद यह मामला सर्वोच्च न्यायालय में भी गया और सर्वोच्च न्यायालय ने यह कहा कि राष्ट्रगान को यदि कुछ लोग सामूहिक रूप से सार्वजनिक स्थल पर गाने से इंकार कर देते है तो it does not amount to disrespect to the National Anthem.

यह राष्ट्रीय गान के प्रति अनादर नहीं है, ऐसा सर्वोच्च न्यायालय का फैसला है । मंत्री जी यहां पर उपस्थित हैं वे उत्तर भी देंगे । मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इस सिलसिले में कानून में संशोधन करने के लिए कानून में परिवर्तन करने के लिए क्यों नहीं सरकार ने आज तक कदम उठाया है । सर्वोच्च न्यायालय फैसला देते हैं, हाई कोर्ट्स फैसला देते हैं, जहां पर सरकार समझती है कि सुविधाजनक बात है, राष्ट्रपति के अध्यादेश लेकर कानून बनाये जाते हैं, सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के फैसले के बाद परिवर्तन हो जाता है । संसद का, सरकार का काम है कानून बनाना और न्यायालय का काम है कानून की परिभाषा करना और उसके हिसाब से फैसला करना और अगर कोई ऐसा फैसला हो जाये, भले ही सर्वोच्च न्यायालय हो जो कि हमारी राष्ट्रीय भावनाओं के प्रतिकूल है, उनके प्रति आदर नहीं रखता तो सरकार का यह कर्तव्य है कि इस प्रकार से कानून बनाये कि सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय अपनी जगह पर रह जाये और यह अधिकार सरकार का है । सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इसमें बाधा नहीं आयेगी । फिर आप कानून बनायें, फिर किसी की मर्जी होगी फिर अदालत में जायेगा, वे रोज आपके कानून को स्ट्रक डाउन करें और आप रोज कानून बनायें, ऐसा ही मान्यवर मैंने देखा है, हमारे ही साथ हो चुका है । मैं बंद था, मैं नैनी जेल से छूटा, अदालत के आदेश से छूटा, जैसे ही नैनी जेल से बाहर आया तो दूसरा आर्डर हमारे ऊपर सर्व कर दिया गया फिर मैं अंदर चला गया । कोर्ट के आर्डर का कार्यान्वियन नहीं हुआ । कोर्ट ने अपना काम किया और गवर्नमेंट ने अपना काम किया, फिर अंदर बंद कर दिया । तो मैं निवेदन करना चाहता हूं कि 1986 में सर्वोच्च न्यायालय ने यह आदेश दिया करीब-करीब पौने दो साल हो गये हैं फैसला दिये हुए तो इस सिलसिले में सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ? राष्ट्रीय गान के प्रति, मंत्री जी जब इसका उत्तर दें तो मैं चाहूंगा कि इसका स्पष्टीकरण दें और इन्हीं शब्दों के साथ जिस भावना से मिश्र जी ने इस विधेयक को रखा उसका मैं समर्थन करता हूं इस आशा और विश्वास के साथ कि सरकार इन चीजों की ओर ध्यान देगी । धन्यवाद ।

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY (Nominated): Mr. Vice-Chairman, Sir, even at the outset I should thank you for the opportunity given to me to speak on a Bill which deserve the support of the entire House.

Sir, so much has been said about the past. This Bill seeks to protect the national honour and integrity and to avoid any insult to the Indian National Flag, the Constitution and the National Anthem. Much has been said...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): One minute, Mr. Ramamurthy. With the permission of the House, I request Mr. Ram Chandra Vikal to occupy the Chair.

(The VICE-CHAIRMAN (SHRI RAM CHANDRA VIKAL in the Chair)

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY): Much has been said as to how the National Flag emerged and all that. Sir, some hon. Members of the House were making out a point that it almost resembles the Congress flag and that is why on some occasions, at some places, at some stage, the National Flag is inadvertently insulted. Sir, I take strong objection to this plea in the sense that the insult is only when it is intended. The Bill clearly states:

"Whoever in any public place or in any other place within public

[Shri Thindivanam K. Ramamurthy]

view burns, mutilates, defaces, defiles, disfigures, destroys, tramples upon or otherwise brings into contempt, whether by words spoken or written or by any other act,..."

That is how it has been put. It has been stated clearly, wherever it is not intentional, it does not amount to insult. So it is not a valid argument. It is not a strong argument, to say that the Congress flag and the national flag are almost similar and that is why the question of insult comes in. Even to suggest that both the flags are alike and therefore the Congress should change its flag or the national flag should have a different colour or a different version, is wrong. You must remember the historical fact, as to how the national flag emerged. The Congress as a party headed the freedom movement and its flag was a symbol of the freedom movement. There were very many internal differences among the Congress leaders when they were heading the freedom movement, but the Congress flag was taken by all of them as a symbol of nationhood, as a symbol of the aspirations of the people for freedom, as a symbol of national integration. What is more, the Congress flag itself had undergone several changes, five or six times. Therefore, just because it resembles the Congress flag, it is not correct to say that the flag should be changed or that it should not be used. It means we are not being fair to the sacrifices of the freedom fighters. Many things have been said about the national leaders. Let me cite a few examples from Tamil Nadu. Thiruppur Kumaran, an youngster, marched with the flag in his hands and he was beaten to death by the police under the British Raj. That was the enthusiasm, that was the courage, that was the dedication of the people who were involved in the freedom movement. I shall quote another example from my own district, South Arcot. There was one Anjalai Ammal, who is no more, who went to jail with a child in her arms. When she went to jail for a second time, she went with the very same child Leelavathy who had by then become seven years. Both the mother and the child were arrested and put in jail. Both times the lady carried the flag with her. Both the mother and the child were beaten. This is the history of our freedom movement and our national flag. In Tamil Nadu there was a stage actor, Vishwanath Das, who was propagating for freedom movement with the flag in his hand; he was propagating Gandhian ideals and the need for attaining freedom. He was singing national songs in favour of the freedom movement. In the midst of singing he died on the stage with the national flag in his hand. Then there was the spectacle in Madras of the Andhra Kesari, Shri T. Prakasam, a Bar-at-Law, who was a Congress leader fighting for freedom and who was beaten up on the streets of China Bazar—the street is now named Subhash Chandra Bose Road. He was beaten by the mounted police. He was carrying the flag in his hand. That was how the Congress flag was safeguarded. It was a pride for the freedom fighters to carry the Congress flag in their hands. With the flag in the hand they fought against the British brutalities and the British oppression. Naturally, when our freedom struggle culminated in achieving independence, it was in everybody's mind that the Flag should symbolise the aspirations of the people who headed the freedom movement and nobody objected to it also. There was no objection to it. But we brought in the Asoka Chakra which symbolises our culture, our bent of mind and everything. I can add one more thing to this.

Sir, we were all children when Netaji Subhas Chandra Bose, with his Indian National Army, hoisted the National Flag in the Andamans and in Imphal. Now bravely he came with his INA was spoken with pride by everybody even in the remote villages of Tamil Nadu. It was spoken by everybody who read the newspapers then and everybody was proud of that

4.00 P.M.

and the pride of the people had no bounds, had no limits. Everybody at that time thought that freedom had come then itself. That is how it was valued and that is how it was cherished and that is how Gandhiji's leadership was taken to the villages. Just because the National Flag resembles the Congress flag which Congress Party the other political parties are now opposing, it does not mean that it should undergo a change. The National Flag, the Constitution and the National Anthem cannot be changed ever twenty years or thirty years or forty years or at the whims and fancies of the political parties that emerged or that are still to emerge. That is not the way to safeguard the honour and integrity of the country. We must look into the spirit of it. So, Sir, as far as this Bill is concerned, I should say that this Bill has come at the right time and with a right purpose and this Bill should be supported by everybody.

Sir, there is an explanation too clause 2 which says:

> "Comments expressing disapprobation or criticism of the Indian National Flag or the Constitution or of any measures of the Government, with a view to obtaining an alteration of the Indian National Flag or an amendment of the Constitution, by lawful means do not constitute an offence under this section."

Sir, it is very clear. If you disagree with the Constitution or the other things, you can do it through lawful means. India is the only country which has given to its people so much scope and freedom in its democratic framework. We have the utmost freedom and we have the utmost right. In no other country in the world do the people enjoy so much of democracy as we do here in our country. In spite of that, if we choose to go against the democratic norms, if we refuse to go by the democratic methods, there is nothing to be said about it. If you want to be an Indian wedded to democracy, this is the only way allowed to you and permitted to you and made available to you which you can make use of and there is no short cut to it by terrorism or by defying the Constitution or by insulting the Constitution or by hurling insults on these symbols of the Nation. By doing that, they forget for a moment that they are not insulting these, but they are only insulting the nation, that they are only insulting the past heritage of the country and that they are insulting the very sentiments of the people.

Now, I have got one thing to say about national integration. Our leaders in the past, during the British days, gave us the idea of integration and gave us the feeling that we were one in spite of our differences in region, in religion and in language. My friend, Shri Gopalsamy, will not disagree with me if I say one thing and it was EVR, Shri E. V. Ramaswamy Naicker, was the first person to start a Hindi school in Tamil Nadu. And I inform this House, Sir, that, that Hindi school was opened by no less a person than Motilal Nehru. He went to Erode. The first Hindi school was opened by EVR. It it unfortunate that there was no followup. It is unfortunate that EVR, at a later stage, for some reason, went out of Congress. But the mind of national integration was strong in him. It was so much that the first Hindi school was started in Tamil Nadu by him and it was Motilal Nehru who came down to Erode to open that school. So also it was under the freedom movement. With the Congress flag in his hand, he courted arrest in Kerala, not in Tamil Nadu, against untouchability. This is how national integration was carried to the streets by the Gandhian movement, with the Congress flag in his hand. And tha Congress flag, afer freedom, has remained as a Congress flag, and the spirit of the Congress flag was taken over by the nation, and the national flag emerged. And just to say that because all these

[Shri Thindivanam K. Ramamurthy]

three colours resembled the National Flag we will not have this flag, does not stand to reason or any logic.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI P. CHIDAMBARAM): Mr. Gopalsamy's father was a great freedom fighter.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: Yes, our friend, Mr. Gopalsamy's grandfather was a great freedom fighter.

SHRI V. GOPALSAMY: He had the national interest in his mind.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: He was a great freedom fighter. He was strong man in his district, Tirunelveli District. He was the District Board president. But let us not talk of power and other things. He was a great freedom fighter. He courted arrest. Shri Gopalsamy will not mistake me. Sometimes it so happens. Family traditions should be kept up. I hope Mr. Gopalsamy, at one stage or other, will lament for his present actions and come to the national fold. But above all these things, the feeling of national integration, the feeling of oneness, the feeling of being proud of our past heritage, must be there. I do not think Mr. Gopalsamy will be lacking in it. Here and there he may oppose me for political purposes. This is another thing. But the DMK, which is an off-shoot of D.K., which was founded by Periyar Ramaswamy Naicker had its beginning, had its foundation, only from the national spirit. In spite of their being angry now and then with the Congress party for political purposes or election purpose, whatever that be, I hope Gopalsamy will never go from that spirit. That is why, at a critical stage, even Mr. Gopalsamy's own leader, Mr. Karunanidhi, wanted Indira Gandhi to come back for giving stability to this country. Very recently. It is in everyone's mind, that national spirit...

SHRI V. GOPALSAMY: Already some rumours are being floated. Do not give further...

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: National spirit is strong in Tamil Nadu. That is why they are in a position to make it out whenever an occasion comes. So also MGR. He is no more. He started life as a Congress man. His public life started only as a Congress man. He would wear nothing else but 'Khadi' in those days. So much was his dedication to the Congress principles. His belief was so much that even though later he joined the DK, the DMK, and formed his own AIADMK....

SHRI V. GOPALSAMY: He did not joint D. K. He joined DMK in 1953. In 1953 straightway he came to DMK.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: I stand corrected if that is so. He had his association with E.V.R. Ramaswamy Naicker. I think that won't be refuted. Even though MGR differed with the Congress Party, he proved himself to be as good a nationalist as anybody else in the Congress Party or in the country. That is why, much to the anger of the opposition parties, he was supporting the Congress Party and the Congress Government. He thought that it is in national interest or in the interest of the country.

As for the Constitution, people have made it an easy method. It is not that they insult the Constitution. Perhaps they want others to think that they are very heroic and that they are prepared to face any punishment for it. The basic purpose is not

to insult the Constitution. What is their intention? It is to get maximum publicity or, if I am not mistaken, cheap publicity. In Tamil Nadu, out of desperation or out of perversion, on the Republic Day or on 15th of August the day when we got freedom, they hoist black flags at public places. It is not that the people approve of it or people support it. But they get wide publicity. Even though their minds cannot be anything other than being nationalists they do anti-national things. Whenever we say that they are not true to the country or that they are anti-national, they jump to the sky saying how can we doubt their national spirit. This is the way in which they give expression to their feeling or they ventilate their misgivings. Everyone gets an impression that they are anti-national. That is how the name of Tamil Nadu has been spoiled in India or in the world by parties who are not anti-national but their misdeeds give an impression that they can be anti-national. So also is the case with the burning of the Constitution. That took place in many places in Tamil Nadu. They wanted some amendment or some protection. The best method is taking it to the people, taking it to the elections or taking to a political platform. But they were not prepared to use it. The easiest way was to burn the Constitution at public places. The police will come and they will court arrest. They will go to court and jail and they will become heroes. That is how they thought they can defy the Centre. Of course, there is nothing wrong in defying the Centre. But you have to have the rightful means and the courage to do it. The method of defying the Central Government or the State Government or the Government run by the Congress Party is not by burning the Constitution. What happens is this. When they go to the court, they deny having burnt the Constitution. He would say that he stepped out of his house or that he would have changed his mind before burning as it is foolish to burn the Constitution. He would say that the police arrested him when he just stepped out of his house. This is the way in which..

SHRI V. GOPALSAMY: You are misleading.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: I am not misleading. You can go into the court records and proceedings. You can tell me as to what your leader, Perarignar Anna, for whom I have very much respect, said in the court. He said, "That was not my attempt; that was not my intention. I have not burnt the Constitution". That was his defence That was the defence taken in the court.

SHRI V. GOPALSAMY: You are misleading. Anna did not burn the Constitution at all. He was arrested even before that. You are referring to the recent episode. And you should not confuse both the things.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: I am not confusing. You allow me to speak. (*Interruptions*) What I am saying was of the past when Anna was alive. But what is happening now? Mr. Gopalsamy himself is one of the leader of the party headed by Kalaignar Karunanidhi. What is happening? They said that they would burn the Constitution. Then utimately how did the D.M.K. end up?

AN HON. MEMBER: Copy of the Constitution.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: We had a perverted genius as the Speaker of the Tamil Nadu Assembly. That is another thing. Once he said "If you burn the Constitution, you will not be

[Shri T. K. Ramamurthy]

eligible to continue to be a Member of the House because you have taken oath under the Constitution and you have no right to insult the Constitution. So, I will expel you". That is what the Speaker said. Immediately, what was the reaction of the D.M.K. party which said that it is going to burn the Constitution? They conveyed to their cadre, "No, no. You write it down in a page. One page will do, a sentence will do. If possible you burn it". Ultimately most of them said, "We have not burnt the Constitution".

SHRI V. GOPALSAMY: You want the Constitution written by Dr. Ambedkar, the original script to be burnt? Is it possible?

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: That is not possible. That is why I said you enter into it to have cheap popularity. That is why I said that the purpose of the D.M.K. people is not the burning of the Constitution or insulting the Constitution. They know that people will rise against them if they do it. It is just a mockery just to show their anger and defiance. This is just an act of mockery which will get the notice of everyone and the publicity in the press will go all over India. This has resulted in all this. Therefore, specially the political people who are in public life, people who lead the political parties must have better indulgence, better way of doing things, better methods of expressing their displeasure, opposition and defiance. It is not the Constitution or the National Flag or the National Anthem that should be subjected to it. You have your own way and methods. Gandhiji had it. Gandhiji never burnt the British flag here when he led the freedom movement. The Congress has shown you the way. You do it. We defied the British people by all methods. We got freedom. You and I, everybody contributed. Mr. Gopalsamy's family has made its contribution. Everyone of us has made the contribution. By insulting the National Flag and burning the Constitution, you are not insulting the Congress party and the Congress leaders here. You are insulting your own grandfather, your own heritage. And we are proving ourselves small in the eyes of the world. So, our nationalism is second to none. Including Gopalsamy, I can say that our nationalism is second to none. Our respect for our past heritage is second to none. But at times we lose our mind and give more weight to our muscle power. So, let us have a better thinking in future, let us have a better approach in future. This Bill, which has come up today, Sir, has given us ample opportunity to sit down in a calm atmosphere and think in a better way so that we march towards stronger integration of the country.

Sir, today some of us were sitting in the Central Hall and looking at the portrait of Sardar Vallabhbhai Patel and we were proud that despite various regions pulling in different directions, what an action Sardar Patel took, what a way he has shown to integrate the whole of India. So also when people come to Delhi from the south they are imbued with better thinking.

Sir, it is on the floor of this House—I am happy to be in the same House —that Arignar Anna, Gopalsamy's leader. I happily acknowledge his leadership, he was such a big man, gave up the demand for separation of Tamil Nadu, his demand for the separation of the South. It was done from the floor of this House. So, it is only when people come to Delhi, come to the North, that they understand as to how people live in this part of the country. Till then they think only they have the problems. The famous thing that the DMK was

saying was that it is always the North which flourishes and the South always goes down. But when we come to the North we find that we are very much better off in all walks of life. Sir we only feel sympathetic or we only feel sorry for the people in the backward States and we wish a better life for them. This is how we get enlightened. And I am sure, that whoever that be, that people who are so far giving thoughts to these kinds of insults and defiance of national symbols will have a rethinking in their minds. On the one hand I am happy that this Bill has been brought forward. On the other hand, I am sorry that we are forced to think on the lines of framing laws to restrict all these happenings. It should have come out of our hearts, out of our minds, out of our blood, it should be in our blood. Anyway, this Bill has come at the right time for a right purpose. I wholeheartedly welcome this Bill and congratulate my hon. friend, Mr. Sheo Kumar Mishra, for having introduced this Bill in this House. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAM CHANDRA VIKAL): Yes, Shri Gopalsamy.

आपने अभी महनशक्ति से कटाक्ष को सुना वैसी ही महनशक्ति से आप बोलिये।

*SHRI V. GOPALSAMY: Mr. Vice-Chairman, Sir, I rise to express my views on the National Honour and Integrity (Protection) Bill, 1987. My Hon'ble friend Chitta Basu is waiting with high hopes that his Bill will be taken up for discussion today. But I know, Mr. M. M. Jacob would have done his level best to see that Mr. Chitta Basu's Bill does not come up today for discussion. So, Mr. Chitta Basu does not have to think that because of my taking more time his Bill will not come up. They have already prepared a list of speakers and there are atleast four more speakers from the side of Congress (I). I feel it is my duty to record my opinion on this Bill.

SHRI CHITTA BASU (West Bengal): They are pursuing their step.

SHRI V. GOPALSAMY: Yes, this is the stretegy they always adopt. I had been a victim last time.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. M. JACOB): This Bill is very important and therefore more people are coming voluntarily.

SHRI V. GOPALSAMY: That suits your purpose. Mr. Vice Chairman Sir, many Hon'ble members spoke on the unity and integrity of India and about protecting the honour of India. It is a fact that D.M.K. once demanded Dravidasthan. Mr. K. Ramamurthy said a little while before that Dr. Anna, himself gave up the demand for Dravidasthan. I would like to enlighten the Hon'ble members on this issue. Since beginning we are demanding for Dravidasthan. But in 1962, when China invaded India, when the mounted cannons of China roared on the mountain Himalayas, Peraringnar Anna was released from the Vellore Central jail. On coming out of the prison he went straight to address a mammoth rally that had collected in the large ground over-looking the prison. While addressing the gathering of lakhs of people from the estrade, Dr. Anna emphatically declared: "There is a serious threat to the independence of our country. In view of this grave danger I am giving up the demand for Dravidasthan". But I wish to remind this august House and also Mr. K. Ramamurthy of the forgotten part of Anna's statement. In the year 1967, on assuming the office of the Chief Minister of Tamilnadu

*English translation of the original speech delivered in Tamil.

[Shri V. Gopalsamy]

Anna delivered a speech in the Conference on Protection of Democracy organised by the students at Abbotsbary Palace, wherein, he made his point abundantly clear. He said, "we gave up the demand for separation; but the reasons for which we demanded it are still alive and Delhi Darbar alone is responsible for this".

The need of the hour, to protect the unity and integrity of the country, is that the centre should treat all sections of the society-racial, lingual and religious-alike. This is the pre-requisite that the centre should do without fear or favour. India is multi-partite and also multi-lingual. But a false and malicious propaganda is being made to malign the linguistic minority, who oppose the imposition of Hindi. These linguistic minorities, who fight for their rights, are stigmatized as anti nationals. For the people of Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and other Hindi belts, Hindi is the mother tongue. While Hindi as the National language and Official language at the centre is a boon to the people of the Hindi belt, it is against every interest of the non-Hindi speaking people, who are forced to look upon Hindi as an anathema.

The great visionary Pt. Jawahar Lal Nehru could understand the sentiments of the non-Hindi speaking people. Yesterday I was going through the speeches of Pt. Nehru kept in the Parliament Library. In one of his speeches, which is Locus Classicus, he declares that English should not be done away with in a fit of emotion and animosity because, English is the door to the domain of all knowledge of world.

My Hon'ble friend Chidambaram and I studied in the same College. He was adjudged as the best orator in English of the University and was also awarded prize. But today the Congress (I) is banking on his skill of convincingly brilliant exposition and power of illuminating elocution in English. Though equally a good orator in Tamil, he can speak also in Tamil when it becomes the official language of the nation. Today I am speaking in Tamil. I am aware that if we speak in Tamil there will be communication break down; nor it is possible to do word-to-word interpretation and articulate our sentiments. Because we have accepted the two language formula with English as the associate language, I speak in English. But I am not enamoured of English. If Tamil becomes the Official language, my Hon'ble friend Chidambaram and I can and will speak in Tamil. When Pt. Nehru was told that the South Indians are intelligent people and are capable of learning Hindi in a short period, Panditji remarked that for the mere fact of their being capable he would not agree to impose Hindi on them. He has gone on record saying that he would be democratic in his approaches at all levels and would never approve of such imperialistic attitude.

Many Hon'ble members are apprehensive of a danger for the unity of India. I make a sincere request to the Hon'ble members to turn the pages of history with an open mind. Did the united India exist before the arrival of the Britishers here? Was this large landscape, stretching from Himalayans to Cape Comorin, known as United India at that time? We had Mauriyan Kingdom. Chandra Gupta founded his Kingdom using his mighty sword. But his Kingdom could not stretch beyond the Vindhyan hills. Gupta's age is known as Golden Age in History. But even Gupta's Kingdom could not reach the south bank of Narmada. During the Mughul period, Aurangzeb is known to have founded a powerful Kingdom. Even his Kingdom did not stretch upto the Cauvery river. So, we learn from history that the present India consisted of many Kingdoms before the Britishers came here. It was the 'Iron man

of India' the late Sardar Vallabhabhai Patel who got the tiny Kingdoms annexed to the Indian Union.

Mr. Ramamurthy rightly said that there were many Kingdoms within India. Britishers, who came to India with the help of the East India Company, brought these Kingdoms together with a view to colonize India with an ulterior motive of an easy administration. India, as a colony under the British, had in it, the present Pakistan, Afghanistan, Burma and also Ceylon. Therefore under the British servitude, right from Kashmir to Kanyakumari, with tormented psyche and suppressed sentiments, the people conglomerated to liberate India from the clutches of the English. It culminated into the independent struggle. The impact of the struggle was so telling that Thiruppur Kumaran, a freedom fighter from Tamilnadu, did not part with the National flag clasped in his hand even while being beaten to death. He parted with his soul but not the National flag.

Mr. Ramamurthy was trying to hammer home the elaborate history behind the National flag. The late lamented Dravidran Leader, E. V. Ramasamy Periyar while in Congress carried Khadi clothes on his shoulder to sell to the people and to educate them about the spirit of Swadeshi. Once Mahatma Gandhi went and stayed in the house of E.V.R. Periyar at Erode in Tamilnadu. Mahatma Gandhi said to the people around him to go to Erode and enquire from Periyar's wife and sister about the duties of the Congressmen. Why Periyar did quit Congress? Because at a Gurukulam in Cheranmadevi in Thirunelveli district-my native district of Tamilnadu when they wanted to discriminate against the non-Brahmins by having two dining halls, one for the Brahmin students and the other for the non-Brahmin students, Periyar did not agree. He opposed that move tooth and nail. Thereafter, at the Kancheepuram rally, he openly declared his disgust and promised to fight for the right of the downtrodden.

Mr. Chidambaram said that my fore-fathers were in Congress. I am really happy about it. But we should not forget a vital point. We should not surmise erroneously that the Congress (I) in power today is the Congress that we are speaking about. When the Congress was founded to beat the trumpet for Independence, there was a great Hero, Netaji Subhash Chandra Bose in the Congress Party. Latter he quit Congress. In the South, there was Hon'ble Muthuramalinga Thevar, who ultimately quit Congress. Lok Nayak Jayaprakash Narayan was in Congress; he also quit Congress later. The late Marxist leader and an ex-member of Rajya Sabha, Mr. P. Ramamurthy was once in Congress. Mr. E.M.S. Namboodripad and Mr. N. E. Balaram were also in Congress. Acharya Narendra Dev took part in the Freedom struggle. Dr. Ram Manohar Lohia, who was opposing Pandit Nehru all along his life, was in Congress. During freedom struggle Dr. Ram Manohar Lohia was, once, made to lie down on ice and tortured by the British. The Indian National Congress was the one that got us Independence. You have no right to make any claim to the glorious deeds of that Congress. Mr. Satya Prakash Malavia made this point very clear while speaking on this Bill.

(Interruptions)...

Don't disturb; If we speak to each other in Tamil nobody can understand and it will be difficult for the Interpreter too... *(Interruptions)*... You had your say...this is my opinion ...*(Interruptions)*... I am building up my own view.

Though Shri Acharya Kriplani and Shri Jayaprakash Narayan were married, they never led married life. They practiced celibacy. Having said all this I would like to point out one

[Shri V. G. Gopalsamy]

thing. Mahatma Gandhi never wanted Congress party to become a political party and gram power. He said that the Congress was founded to get Independence for India and it should not continue after achieving its goal. But to the disappointment of Gandhiji the Congress was not dissolved.

Sir, the people of Assam, Meghalaya, Nagaland, Tripura, and Manipur are in the Indian Union. Dr. Ratnakar Pandey and Shri Ram Chandra Vikal, who is now in Chair, spoke on this Bill before sometime. I would like to know from them whether Congress leaders or Ministers have the nerve to go and tell the people of North Eastern States to give up English and learn Hindi. That region is already under the grip of grave danger. An Organisation known as NAMMAT is operating surreptitiously with its headquarters in Burma to urge the North Eastern States—the Gordian knot—to secede from India. The name NAMMAT is an abbreviation in which, N stands for Nagaland, A for Assam, M for Manipur, M for Meghalaya A for Arunachal Pradesh and T for Tripura.

There is also a very serious threat from the North. It was decided by the leaders long before that, Jammu and Kashmir should remain an integral part of India. The late Chief Minister of Jammu and Kashmir Mr. Sheikh Abdullah asked for autonomy of State but categorically declared to remain in the Indian Union. But today, in thata very State, we hear slogans like 'Pakistan Zindabad'. The Congress (I), to grind its own axe, caused a split in the National Conference. As a result there is simmering communal tension often erupting as volcanic riots in the State So also, you succeeded in spiliting Akali Dal and today there are three groups atleast. Now, 'Khalisthan' slogan is being echoed with a renewed vigour everyday

I agree that the National flag has to be honoured. Some Hon'ble members also observed that there is some confusion, in some parts of the country, in identifying the National flag for it resembles the flag of Congress(I). Either you should change the colour of the Congress flag or National flag. I shall come to this point latter. Now I want to refer to some unpleasant pages of history. The D.M.K. has been agitating and protesting all along against the Constitutional provision declaring Hindi as the National language. On 26th January, 1965 when Hindi became the National language, D.M.K. launched an agitation all over Tamilnadu. Thousands of people were arrested. But what followed was the worst part of history. The Indian army, meant to protect our borders, was unleashed on the Tamils. Yet even, the ebullient and unyielding youths fought the army courageously. Eight persons including Sivalingam, Aranganathan, Sinnasamy, Mayavram Sarangabani, Keeranur Muthu and Viralimalai Shanmugam and Sathamangalam Muthu committed self immolation. At that time, Mr. O. V. Alagesan and Mr. C. Subramaniam, who were Ministers at the centre, resigned and came to Tamilnadu.

Pandit Nehru never approved of Hindi fanaticism. He was circumspect and he placed the unity of India above everything. Even Smt. Indira Gandhi never spoke of imposing Hindi. Here, I wish to reiterate the stand of D.M.K. on the language issue. We want that all the regional languages should be declared as official languages. Till such declaration is made, English alone should be the Official language of India. You may not agree with me; but I have the right to articulate my views. Only a country, where our mother tongue is the National language can be called our Motherland. The sense of belonging to a Nation cannot be inculcated at gun point.

An atmosphere has to be created wherein, every individual can imbibe National character in the natural process.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI) IN THE CHAIR]

An Hon'ble member was trying to refute the charge that the 'North flourishes and the South perishes'. But the fact remains that the Prime Ministers have always been from the North. Pt. Nehru, Shri Lal Bahadur Shastri and Smt. Indira Gandhi belonged to Uttar Pradesh. Mr. Rajiv Gandhi also hails from Uttar Pradesh. However, we had a Prime Minister from Gujarat for some time. But no one from the South could become Prime Minister so far.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: Mr. Gopalsamy, most of the President came from the South. Our present President also hails from Tamilnadu.

SHRI V. GOPALSAMY: But the powers are vasted in whom? The President or the Prime Minister? We have seen how Presidents struggled in vain to execute their wishes. And we know what regards the Prime Minister has for the Institution of President. I don't want to dig up the issue. My friend is unnecessarily dragging me into it.

Mr. Vice-Chairman, Sir, it was said that we should respect and regard the Republic day and also the Independence day. They also said that Constitution should be respected. With great anguish and deep distress, I would like to tell Mr. Ramamurthy that we did not do it for cheap popularity... (*Interruptions*)...

We admitted even in the Court that we burnt some parts of Constitution ... (*Interruptions*)... There are the Court records.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: Yes, yes. How about your party Leaders?

SHRI V. GOPALSAMY: If you have the guts you get those records.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No, no, side comments please.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: Sir, I take his challenge ... (*Interruptions*)...

SHRI V. GOPALSAMY: I deposed before the Court.

SHRI THINDIVANAM K. RAMAMURTHY: Don't give wrong facts to the House. Your party Leaders did go back in the Court.

SHRI V. GOPALSAMY: What wrong facts? You are totally confused. I was quietly listening to you. Now, when I say I deposed before the Court, why are you getting annoyed?

SHRI A. G. KULKARNI (Maharashtra): Mr. Gopalsamy, just a minute. Can you give us a trailer in English about what you said?

SHRI V. GOPALSAMY: Yes, I will do it.

SHRI P. CHIDAMBARAM: I have no doubt that Mr. Gopalsamy deposed before Court that he consciously burnt a copy of the Constitution. But that, I think, is not a matter to be proud about. It is a matter to be ashamed of ... (*Interruptions*)...

SHRI V. GOPALSAMY: That is different.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV (Maharashtra): Sir, I am on a point of order... (*Interruptions*)... just a minute.

SHRI V. GOPALSAMY: I have only seven minutes. I have to complete it.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: My point of order is different. Mr. Gopalsamy is speaking very fast, but the interpretation is not in the same speed.

SHRI V. GOPALSAMY: That is why we want Tamil also to become the Official language... (*Interruptions*)... That is my arguments. Then only, we will feel that we are equal citizens in this country. Otherwise when we visit this place, we feel, we are foreigners in this country. Because it has become the fountain head of Hindi fanaticism... (*Interruptions*)...

Mr. Vice-Chairman Sir, I want to make one thing clear to those who say that we should respect the Republic day, the Independence day an the National flag. In the National flag there is Ashok Chakra, inscribed at the centre. Why is it there? Ashoka invaded Kalinga. But after that victorious war, the emperor Ashoka became an apostle of peace. So you chose the Ashok Chakra as a symbol of peace and in honour of Ashoka. But what is going in Srilanka? Jayawerdene, the President of a racist regime, was your honoured guest on the Republic day. If it was your sincere wish that all the citizens should take part in the Republic day celebrations, you would not have done this. Inspite of condemning him, you accorded him a red-carpet welcome. You even celebrated that event. You did everything to humiliate us.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): He is talking something that is not relevent to this subject. (*Interruptions*)...

SHRI V. GOPALSAMY: I am speaking very relevantly ...(*Interruptions*)... because they referred to the Republic day. While celebrating the Republic day you invited a monster here... (*Interruptions*)...

SHRI V. NARAYANASAMY: Hon'ble friends, so long he has been telling that he wants to respect the National flag and symbol and everything. But he puts a question mark there. Whether any Indian will say that he will not respect the National flag and National symbol? (*Interruptions*)...

SHRI V. GOPALSAMY: Mr. Vice-Chairman Sir, I think my Hon'ble friends of the Congress (I) will respect my right to speak. I am sure, the Hon'ble Minister will agree with me. You are in majority. Many of you will get chance to articulate your views. Ten of you can answer for what I say now. You have such talented people on your side. I once again reiterate my right to speak in this august House. My views may not be agreeable to you. But Sir, I would like to ask whether it was right on the part of the Government to invite Jayewardene on an occasion to be celebrated throughout the country, and treat him as an honoured guest for five days, wounding the feelings of a community. In last November, Jayewardene came to Delhi after attending the SAARC at Kathmandu. While staying in the capital he cast aspersions on the then Chief Minister of Tamilnadu, the late Mr. M. G. R. ... (*Interruptions*)...

Because he is no more, I am not referring to him for any political gain. If you go through the records of Rajya Sabha you will find it there. I asked about it on the floor of this House. Even when Mr. M.G.R. was alive, I questioned the propriety of a visiting foreign dignitary misusing the diplomatic privileges to cast aspersions on a Chief Minister. You ask for yourselves, whether such an impropriety was ever committed in the Independent India. I still wonder how this was taken so flippantly by the centre. I also asked if it was proper and palatable on the part of Mr.

Rajiv Gandhi to have been a silent witness to such a derogatory utterance. That is what I ask even today. If you are really serious and committed to the unity and integrity of India, you should learn to respect of the sentiments of all sections of society. If you refuse to respect, I am afraid, the unity and integrity of India cannot be protected. When I say so, I am aware, you will call me an anti-national.

I am reminded of certain remarks by the Prime Minister. After assuming the Office of the Prime Minister, Mr. Rajiv Gandhi, in a speech during his visit to the North Eastern States, launched wild allegations on the opposition leaders calling them anti-nationals. Are the opposition leaders anti-nationals? Is patriotism the monopoly of Congress (I)? The remarks of the Prime Minister were not only uncalled for but also highly condemnable. Those in power at the centre often forget that India is a federal State comprising of different ethnic groups each having its distinct cultural identity and language.

My Hon'ble friend and Minister of State for External Affairs Mr. Natwar Singh is here to make a statement condemning the decision of the South African Authorities to ban 17 Anti-Apartheid Groups in South Africa. But what you have done in Srilanka? With a sense of paralysing calamity, with a bleeding heart, I would like to ask you a question. Why are you all out to protect the unity of another country using our army? Who are we to decide the political destiny of an ethnic group on a foreign soil? You say that a neighbouring country should not be divided. If it be so, who divided Pakistan? Why did you send our army, commanded by Field Marshal Manekshaw to the erstwhile East Pakistan? Why did we say that Dhaka should not be under Karachi? Because, we thought that was the right thing to be done on humanitarian grounds. And the humanitarian flag fluttered atop the most in Bangladesh.

But when the plight of the Tamil in Srilanka—who have an affinity with our country—attracted the same humanitarian grounds, though far more deservedly, they have been let down in the most inhumane manner. The humanitarian flag was lowered to half mast when the question of protecting the Tamils arose. Having done this, who are we to exterminate the liberation Tigers, fighting to liberate from the clutches of Singhla racist regime? You have sent one lakh Indian troops to Srilanka. You are spending 4 crores of rupees everyday. You are spending this money to kill whom? Our own people: the Tamils and our soldiers. Our people are fighting each other and getting killed while Jayewardene is having a villainous laugh as a spectator of the fratricidal events happening on his soil. I only plead with you to look at the tragic plight of our people. Blood of our brethren flows into the sea widowing our women-mothers and sisters. This must be stopped immediately.

Without bothering to put an end to this ongoing tragedy Mr. Rajiv Gandhi has gone on record saying that "The Tamil Tigers represent none". Mr. Rajiv Gandhi has alleged to have promised Jayewardene that he would get Mr. Prabakaran beheaded and keep his head at the feet of Jayewardene. You have decided to kill Mr. Prabakaran. Prabakaran may die, Prabakaran may be killed. But the flame of freedom lit by the Tigers will keep glowing for ever. It can never be put out (*Interruptions*)... Unity and inte-

[Shri V. Gopalsamy]

grity cannot be forced on people. A climate has to be created in which this can be assimilated in a natural process.

6.00 P.M.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Mr. Gopalsamy, you can continue next time.

SHRI A. G. KULKARNI: Mr. Vice-Chairman, Sir, I just want to know—and I think Mr. Chidambaram will tell me on this—whether the Tamil language can only be spoken in shouting voice. This was a jarring note being played. In Rajya Sabha it should be a melodious voice.

SHRI V. GOPALSAMY: That depends on the issue. May I continue?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No. You can continue next time. Mr. Natwar Singh is to make a statement.

STATEMENT BY MINISTER

REGARDING THE DECISION OF THE SOUTH AFRICAN AUTHORITIES TO BAN 17 ANTI-APARTHEID GROUPS IN SOUTH AFRICA

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI K. NATWAR SINGH): I rise to express on behalf of the entire membership of this House and the Government and people of India our deep sense of outrage and dismay at the decision of the South African fairs condemning of the South African authorities to ban all activities of 17 anti-apartheid organisations in South Africa which we unreservedly condemn. The denial of the right to engage even in peaceful protest against the abhorrent system of apartheid is not only another vicious assault on liberty in South Africa, but also a clear demonstration that the draconian measures in force under the state of emergency have totally failed to extinguish the flame of nationalism and the spirit of defiance on the part of the brutally oppressed masses of South Africa. The time has surely come for the international community to address itself in all earnestness to the urgent challenge of dismantling apartheid by all available means. In this hour of trial the Government and people of India reiterate their firm and unequivocal support for the valiant struggle of the oppressed masses of South Africa to undo apartheid and to establish a democratic policy in that country.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY (Andhra Pradesh): I fully support this statement of the Minister of State in the Ministry of External Affairs condemning of the South African decision to ban 17 anti-apartheid organisations in South Africa. We are really very unhappy that still the racist Government in South Africa is continuing with its illegal racist and unhumanitarian activities on that soil.

In fact, the South African Government has suppressed the majority rights of the South African people and it is still running a White minority Government against the wishes of the whole humanity. We are proud that the nations of the world, including India, are wholly in support of the African people struggle against apartheid being continued in South Africa. We fully aassociate ourselves against apartheid and we must take every step to see that these illegal and evil designs of the South African Government should not continue and should not succeed. India must take all necessary steps to mobilise the world public opinion and call, if necessary, a meeting of the non-aligned nations and other Commonwealth nations to see that South Africa puts an end to this policy of banning 17 anti-apartheid organisations in South Africa.

I would like to have an assurance from the Minister whether the Government of India will take a lead in